चकमक

जून 2000

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00

● दिव्या अग्रवाल, चौथी, उज्जैन, म.प्र.

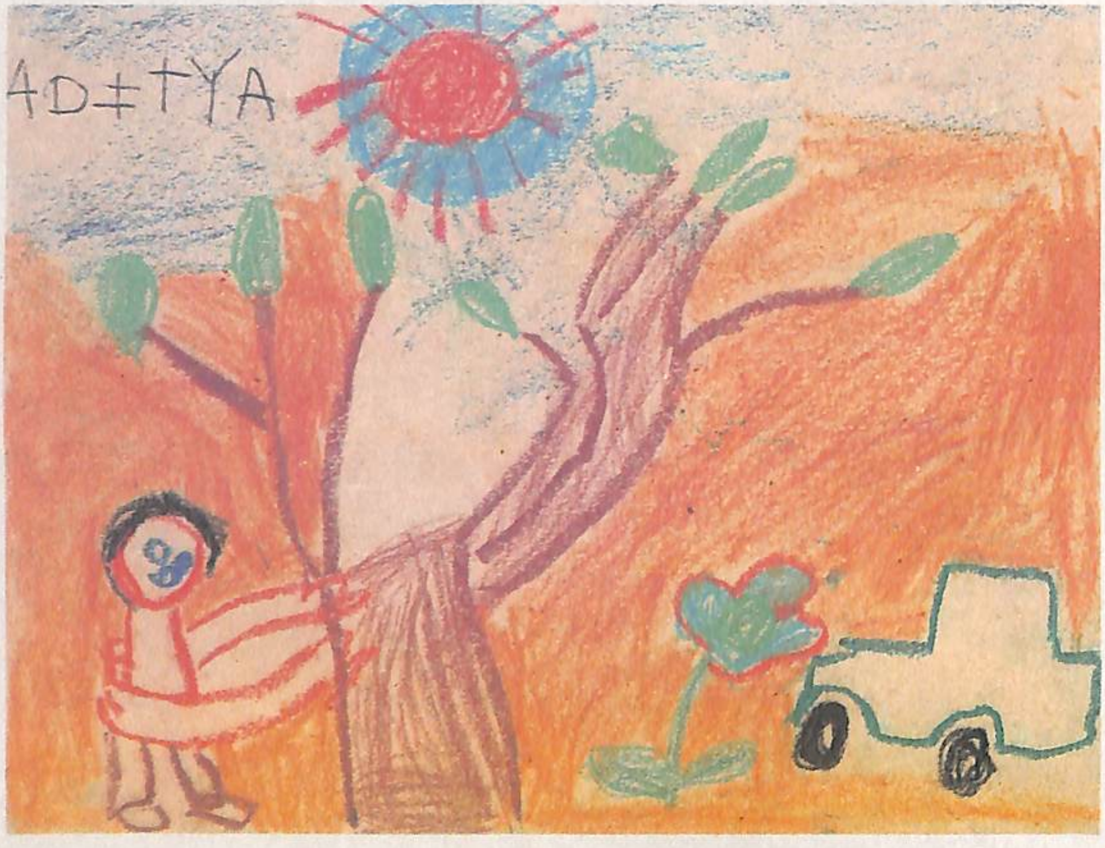

● आदित्य, पाँच वर्ष, नई दिल्ली

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

जून, 2000 के 177 वें अंक में

गर्मी और सूखे से कैसे निपटती हैं वनस्पतियाँ

चिलचिलाती गर्मी में जब हमारे लिए एक-एक दिन काटना मुश्किल हो जाता है, तब कोमल पेड़- पौधों का क्या हाल होता होगा। क्या करते होंगे, कैसे निपटते होंगे - पढ़ो पेज 6 से।

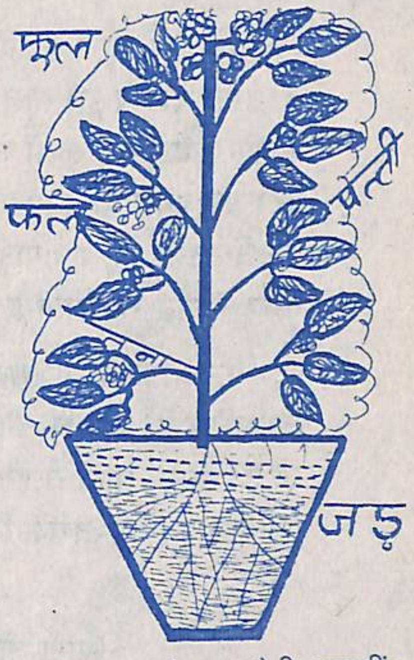

● अनंतराम लौधी, सातवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

कहानी

29 ✻ रद्दी सामान

कविताएँ

3 ✻ नानी का गाँव

20 ✻ मैं घुन्ना था

रोचक श्रृंखला

17 ✻ खेल दुनिया भर के : बास्केट बॉल

26 ✻ हमारे शिक्षक - 20

हर बार की तरह

2 ✻ इस बार की बात

25 ✻ वर्ग पहेली

34 ✻ माथापच्ची

धारावाहिक

13 ✻ प्यारा कुनबा : 4

मेरा पन्ना

तुम्हारे अपने पन्नों में तुम्हारी रचनाएँ और तुम्हारे चित्र : पृष्ठ 4, 5, 24, 37 और 38 पर

और भी बहुत कुछ

9 ✻ तुमने लिखा ...

11 ✻ अपनी प्रयोगशाला : बुलबुले बनाओ

22 ✻ मैंने देखा पिटारा उत्सव

36 ✻ एक मज़ेदार खेल : चुटकी में जोड़ो

आवरण : यह चित्र ' द कम्पलीट बुक ऑफ कैकटाई एंड सक्यूलेंट्स' से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

● मयंक गौर, तीसरी, खिरकिया, होशंगाबाद, म. प्र.

चलो इस साल की गर्मी भी खत्म होने को है। तुम्हारी गर्मियों की छुट्टी कैसी बीती? कैसे बिताई गर्मियाँ! दिन भर घर में पंखे या कूलर के सामने बैठे रहकर और शाम को कहीं पार्क की सैर करते हुए या कुछ और भी किया।

गर्मियों में पानी की समस्या एक मुख्य समस्या होती है। हमारे देश में इस साल कई इलाकों में सूखा पड़ा। जबकि पिछले कई सालों से अच्छी बारिश होती रही है। दरअसल हमारे ही कारण होती है पानी की कमी। हमारी आदतें गड़बड़ हों, हम पानी का मोल न समझें तो पानी की कमी तो होगी ही। जब पानी पर्याप्त मात्रा में मिल रहा होता है तब हम नहीं सोचते कि इसकी कमी भी पड़ सकती है।

राजस्थान और गुजरात जैसे राज्यों में जहाँ बारिश भी कम होती है, पानी की कमी पड़ना स्वाभाविक है। हालांकि इन्हीं इलाकों में पानी सहेजने के बहुत बढ़िया तरीके इस्तेमाल किए जाते रहे हैं। सैकड़ों सालों से इन इलाकों के लोगों ने पानी को इकट्ठा करने और उसे किफायत से इस्तेमाल करने के तरीके विकसित किए हैं। फिर क्यों आज इन तरीकों को भूलते जा रहे हैं हम?

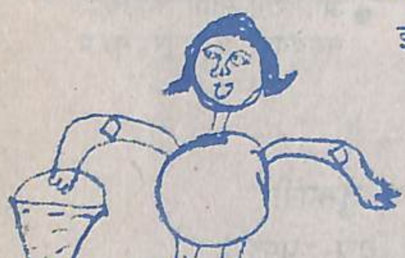

● रजनी, तीसरी, भोपाल, म. प्र.

पानी जीवन के लिए एक ज़रूरी चीज़ है, यह तो हम सभी जानते हैं। सिर्फ इन्सानों के लिए ही नहीं, जानवरों और पेड़-पौधों के लिए भी। आदमी के अलावा हर जीव अपने-अपने तरीके से पानी की ज़रूरत को समझता है और इसे किफायत से खर्च करने के अपने तरीके भी विकसित करता है। इस अंक में तुम पढ़ोगे कि पेड़-पौधे कैसे पानी की कमी से निपटते हैं। सवाल यही है कि जब पेड़-पौधे भी इतनी समझदारी बरत सकते हैं तो फिर हम इतने नासमझ क्यों हैं?

● चकमक

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-15 अंक-12 जून, 2000

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम
अशोक रोकड़े

सहयोग
राकेश खत्री
सुशील शुक्ला

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

नानी का गाँव

बड़ा प्यारा लगे
हमें नानी का गाँव।

सुबह शाम को हर दिन
खेतों में जाना
कंछी के बागों से
अमिया चुराना
नानी के द्वारे पर,
पीपल की छाँव।

नये-नये खेलों को
रोज-रोज बुनना
चिड़ियों की नई-नई
आवाज़ें सुनना
कोयल की कूक,
कौवों की काँव।

जाने कब उड़ जाते
छुट्टी के दिन
खूब मौज-मस्ती में
कटते पल-छिन
घर में इक पल को भी
टिकते न पाँव।

● अशोक अंजुम

● चित्र : शोभा घारे

मेरा पन्ना

हवा आती है

हवा आती है
दरवाजा खोल जाती है
आँधी आती है
तो आँखों में धूल भर जाती है
बारिश आती है
तो फिर धूल भाग जाती है
जब ओले गिरते हैं
तब मुश्किल पड़ जाती है

शिवांक, तीसरी, दिल्ली

अपाला मिश्र, साढ़े चार वर्ष, देहरादून, उ. प्र.

बदला मौसम

सूरज प्रचंड गर्मी बरसा रहा था। हर एक अपने-अपने घर में छुपा हुआ था। पर अचानक ये क्या हुआ, ये मौसम तो अचानक बदल गया। उस भरी दोपहरी में, बच्चे जो गर्मी की परवाह न करके खेल रहे थे, वे भी चौंक गए।

बादलों ने आकाश को पूरी तरह ढँक लिया था। ऐसा लग रहा था जैसे बिना कपड़े पहना हुआ सूरज अब मोटा ऊनी मफलर ओढ़ के आया हो। अब बादल घुमड़ने लगे और अचानक बारिश होने लगी।

एक दिन तक लगातार बारिश हुई। पर ये क्या अचानक ये रूई के फाहे गिरने लगे। नहीं-नहीं ये तो बरफ गिर रही है। जब बरफ पूरी तरह गिर गई तो दिखा कि हिमालय बर्फ से भर गया है। आकाश का मन सुमित्रानन्दन पन्त की तरह कविता लिखने का होने लगा। पर वह ठण्ड को देखकर कविता का मोह त्यागकर अपने भाई के संग कम्बल में दुबक गया। जब सुबह हुई तो आकाश की मम्मी ने उसे नहाने को आवाज़ लगाई। आकाश जब नहाने पहुँचा तो जैसे ही उसने पानी को हाथ लगाया तो उसका नहाने को मन नहीं हुआ। उसने किसी तरह नहाया। उस शाम को ठण्ड की परवाह न कर उसने अपने सब दोस्तों को बर्फ के गोले मारे।

रात को जब वह सोया तो उसे गरम सूप, टोस्ट, गाजर और बहुत अच्छी-अच्छी चीज़ों के सपने आने लगे। इस तरह वह अपनी स्वप्नों की दुनिया में खो गया। इस तरह बीता आकाश का बर्फीला दिन।

मनु पाण्डे, जाखनदेवी, अल्मोड़ा, उ.प्र.

यह पृष्ठ डॉ. सुनीता जोशी की स्मृति में

हमारी पिकनिक

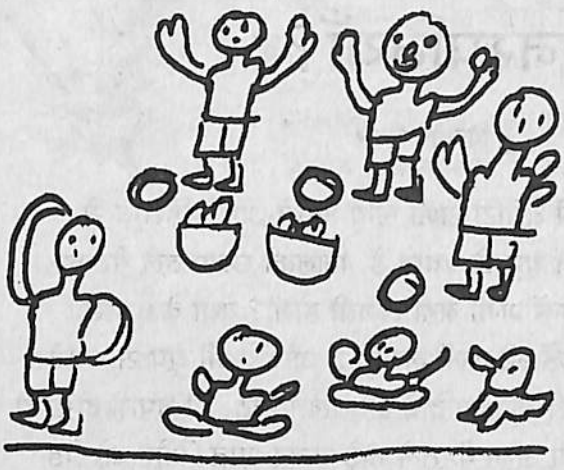

एक दिन हम लोग पढ़ रहे थे। तो वहाँ सिस्टर आ गईं। और हमसे कहने लगीं कि कल हम पिकनिक जाएँगे। यह सुनकर सबने कहा हाँ, सिस्टर जी हम जाएँगे। तो दूसरे दिन हम जल्दी स्कूल आ गए। वहाँ पर सब पकवान बन गए थे।

हम लोग लगभग 1 बजे पिकनिक के लिए सामान तैयार कर चल दिए। चलते-चलते हमें एक गुफा जैसा पत्थर दिखाई दिया। वह बहुत अच्छा लग रहा था। फिर हम लोग एक खूब बड़े मैदान में रुककर वहाँ साफ-सफाई करके अंताक्षरी का खेल खेला। कुछ पकवान खाए। और खेल-कूद हुए। और ईनाम भी मिले। मुझे भी ईनाम मिला। फिर सिस्टर ने कहा अगली बार भी पिकनिक मनाने आएँगे। तो हमें और भी अच्छा लगा।

कहानी और चित्र : कुलवेन्द्र सिंह पिछौड़े, दस वर्ष, पाण्डुतला, बालाघाट, म. प्र.

मेरा बगीचा

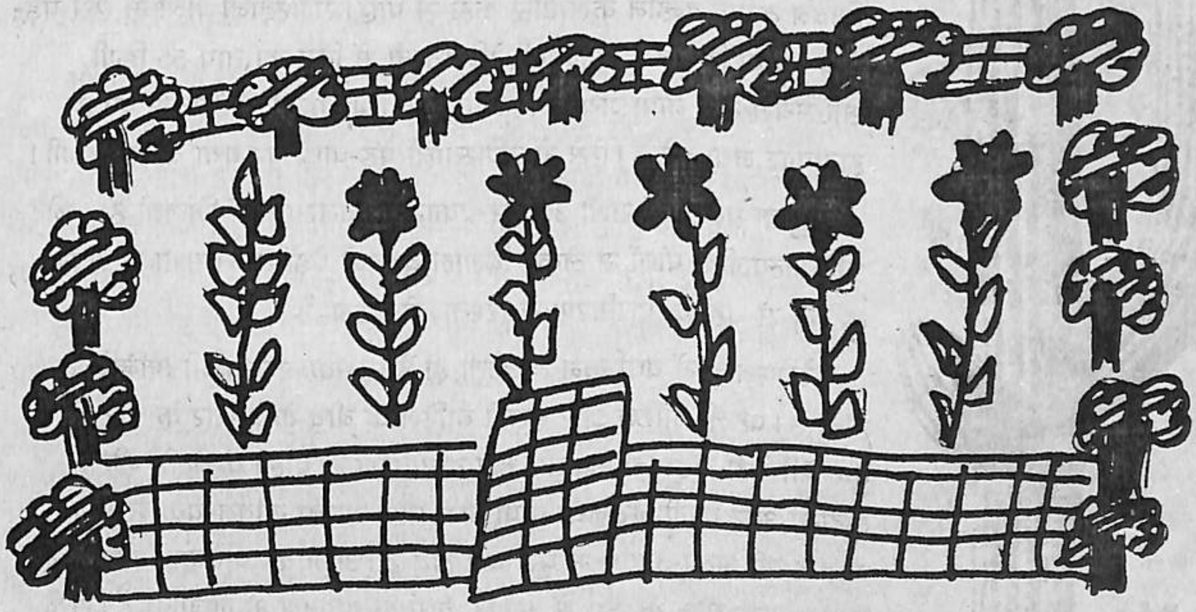

मेरे घर में एक बगीचा है। वह बहुत सुन्दर है। उसमें कई पेड़-पौधे हैं। उनमें फूल भी लगते हैं। कुछ पौधे गमलों में भी लगे हैं। मैं अपने बगीचे में खेलती हूँ। मैं उसकी देखभाल भी करती हूँ। समय पर पानी और खाद भी डालती हूँ। वह मेरे घर की शोभा बढ़ाता है। मुझे बगीचा बहुत पसंद है।

कहानी और चित्र : मोनिका कोटवानी, छठी, भोपाल, म. प्र.

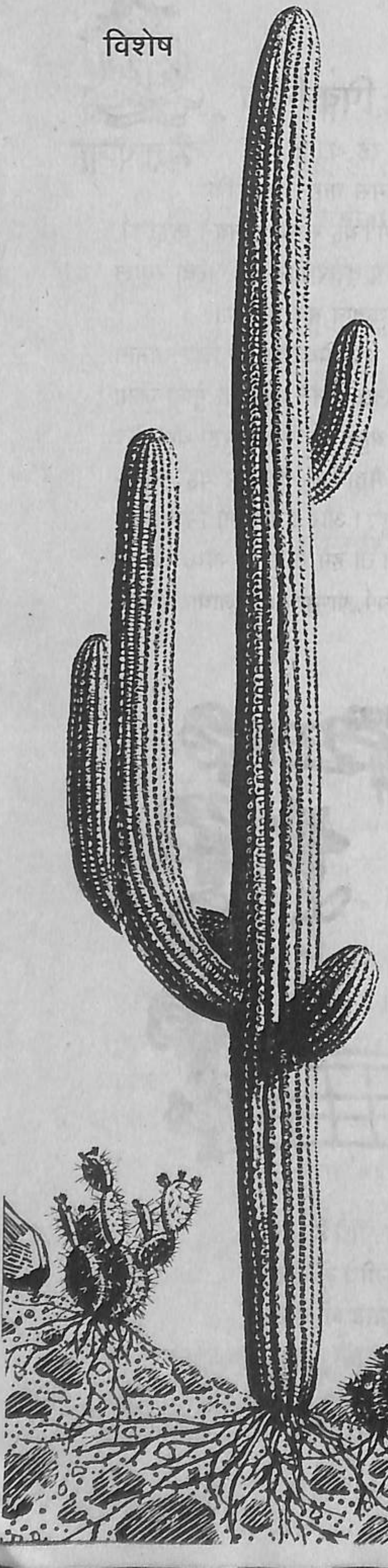

सूखे और गर्मी से कैसे निपटती हैं

वनस्पतियाँ?

● किशोर पँवार

सूखे व गर्मी से निपटने की तैयारी सभी जीव अपने-अपने हिसाब से करते हैं। परन्तु जो पेड़ हमें धूप से बचाते हैं, जिनकी छाया तले बैठकर हम आराम पाते हैं, क्या उन्हें गर्मी नहीं लगती होगी? क्या वे धूप से बचना नहीं चाहते होंगे? उन्हें भी गर्मी लगती है और वे भी धूप से बचने की कोशिश करते हैं। हमारी तरह यदि वे भी चलते होते, तो तपती दोपहरी में छोटे-छोटे पौधे बरगद या आम के तले खड़े नज़र आते। और बड़े पेड़ शायद किसी पहाड़ के नीचे। परन्तु ये तो ख्याली बातें हैं, ऐसा तो होता नहीं है।

ये पेड़-पौधे अचल ज़रूर हैं; पर असहाय नहीं। ये जड़ पौधे जहाँ हैं, वहीं अपने हिसाब से पानी की कमी और तेज धूप का सामना करने में पूर्ण सक्षम हैं। कुछ पौधों में तो इसके लिए आश्चर्यचकित कर देने वाले उपाय देखने में आते हैं। जिन्हें देखकर सोचना पड़ता है कि आखिर इतने विचित्र तरीके इन्होंने कैसे और कहाँ से पाए। रेगिस्तानी क्षेत्रों में ऐसे पेड़-पौधे ज़्यादा मिलते हैं। अफ्रीकी रेगिस्तानों में दिन का ताप 55 डिग्री सेल्सियस तक नापा गया है। हम लोग 41-42 डिग्री सेल्सियस पर ही हाहाकार मचा देते हैं। ऐसे में रेगिस्तानी पेड़-पौधों पर क्या बीतती होगी।

शुष्क प्रदेशों में सभी आकार-प्रकार की वनस्पतियाँ मिलती हैं - छोटे-छोटे अल्पजीवी पौधों से लेकर विशाल बहुवर्षी पेड़ों तक। सभी ने अपने तरीकों से यहाँ के पर्यावरण से रिश्ता जोड़ रखा है।

रेगिस्तान में वर्षा कम तो होती ही है, इसका समय भी अनिश्चित होता है। पहली बारिश और दूसरी बारिश के बीच के अन्तर के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इस वातावरण में पीली कंटीली, नीली कंटीली और कैलीफोरनिया पॉपी जैसे पौधे अपना जीवन-चक्र मात्र 4-6 सप्ताह की अल्प-अवधि में पूरा कर लेते हैं। आगे का प्रतिकूल मौसम ये कठोर, सूखे बीज के रूप में अगली वर्षा के इंतज़ार में गुज़ारते हैं। सूखे का सामना करने के बजाय उससे बचने का तरीका है यह। पर सभी

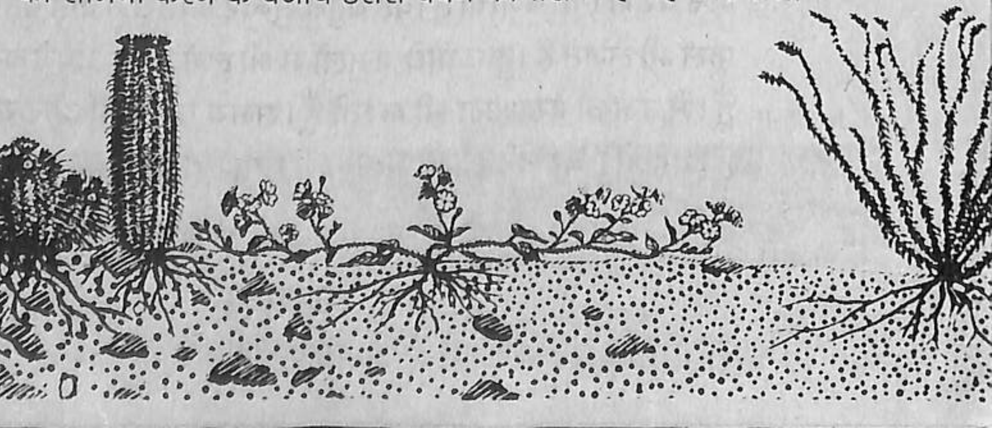

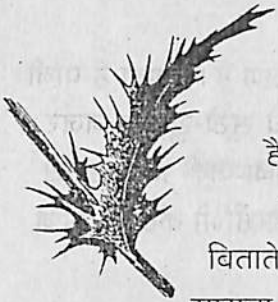

रेगिस्तानी वनस्पतियाँ तो ऐसा नहीं कर सकतीं। कुछ को तो सूखे से जूझना पड़ता है। कुछ झाड़ियाँ और पेड़ ऐसा ही करते हैं।

एक-डेढ़ माह की अल्पकालिक वर्षा के बाद सूखे के दस-ग्यारह महीने ये पेड़ कैसे बिताते हैं यह जानना कम रोचक नहीं। गौर से देखने पर पता चलता है कि सूखे का सामना करने वाले पौधों की दो बिरादरियाँ हैं। पहली बिरादरी के सदस्य, जब भी पानी बरसता है, अधिक-से-अधिक पानी अपने शरीर में जमा कर लेते हैं। पूरा पौधा इस काम में माहिर होता है। ग्वारपाठा, सीडम और पत्थरचट्टा की पत्तियाँ पानी-संग्रह का काम करती हैं, जबकि कांटाथूअर, दूधी, नागफनी व तरह-तरह के कैक्टस में यह काम तना करता है; क्योंकि इनमें पत्तियाँ काँटों में बदल जाती हैं। अपने अंगों में पानी भरने के कारण ये फूले-फूले नज़र आते हैं।

हर पौधे के पास पानी का अपना जमावड़ा होता है। किसी में पत्ती में, तो किसी में तने में। ऐसे में बाहर तो सूखा ही सूखा होता है, परन्तु पौधे के अन्दर पानी की कोई कमी नहीं होती। इन पौधों की माँसलता (गूदेदार शरीर) प्रभावी हो; यानी जमा पानी अधिक समय तक चले, इसके लिए यह भी ज़रूरी है कि इनकी सतह से पानी वाष्प के रूप में कम-से-कम उड़े। विकास के दौरान अधिकांश कैक्टस और अन्य माँसल पौधों के पानी उड़ाने वाले अंगों यानी पत्तियों में भी बदलाव आए हैं। तभी तो इतनी गर्मी में ये जीवित रह पाते हैं। पत्तियों ने बदलकर तीखे, चुभने वाले काँटों का रूप ले लिया है, जिससे पानी तो कम उड़ता ही है, चरने वाले जंतुओं से भी इनकी रक्षा हो जाती है।

माँसल पौधों की सतह से पानी उड़ने की क्षमता का पता लगाने के लिए आयबरलिया सोनोरी के तने को काटकर एक संग्रहालय में रखा गया। उस समय इसका वजन 7.5 कि.ग्रा. था। आठ वर्षों तक बिना पानी के, गर्मी के दिनों में, उस पर लगातार नई-नई शाखाएँ फूटती रहीं और इन आठ वर्षों में उसके वज़न में मात्र 4 कि.ग्रा. की कमी आई। यानी पानी की हानि की दर केवल 500 ग्राम प्रतिवर्ष थी। है न गज़ब की बात! बिना पानी बिना जड़, इतने लंबे समय तक जीवित रहना।

एक और उदाहरण सीडम में देखने में आता है। इसके पौधों को फूल वाली अवस्था में तोड़कर सुखाने के लिए अखबारों के बीच दबाकर रखा जाए और जल्दी सुखाने के लिहाज़ से बार-बार अखबार बदले जाएँ तो भी इसमें सूखने के पहले बीजों का निर्माण पूरा हो जाता है। इस तरह विपरीत परिस्थितियों में भी यह फलता-फूलता रहता है।

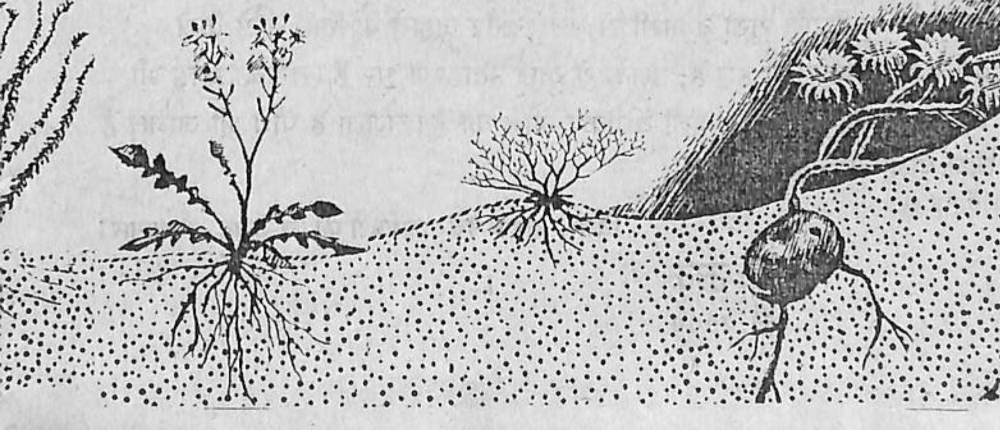

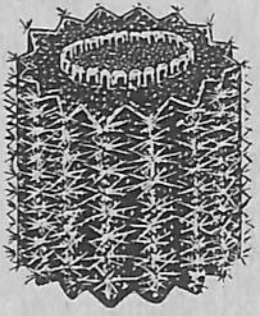

दूसरी बिरादरी के पौधों का तरीका माँसल पौधों से अलग है। लगता है पानी संग्रह की प्रवृत्ति इनमें नहीं। दूर से देखने पर अधिकांश पौधे सूखे-सुखाए नज़र आते हैं। जैसे कैर (कैपेरिस) और इफीड्रा की झाड़ियाँ। जितना पानी मिले उससे काम चलाना इन्होंने सीख रखा है। और तो और कुछ तो उसमें भी कटौती करने में उस्ताद हैं।

इनकी पहली कोशिश यही होती है कि ज़मीन में गहरे जाकर पानी तलाशें। इसके लिए इनकी जड़ें 30 मीटर गहराई तक भी जाती हैं। पानी को खर्च करने में सबसे बड़ा योगदान पत्तियों का होता है। पौधों की जड़ों से सोखे गए पानी का 75 से 90 प्रतिशत पानी, ये वाष्प के रूप में उड़ा देती हैं। वे भी क्या करें, उनकी रचना ही कुछ ऐसी है। हवा के आने-जाने के लिए उन्हें अपने वायु-छिद्र खुले रखने होते हैं। और ऐसे में ही उनके अंदर का पानी इन खुले छिद्रों से वाष्प के रूप में उड़ता रहता है। इस फिजूलखर्ची को रोकने के लिए इन पौधों की पत्तियों के आकार, प्रकार, रूप-रंग आदि में कई परिवर्तन होते हैं।

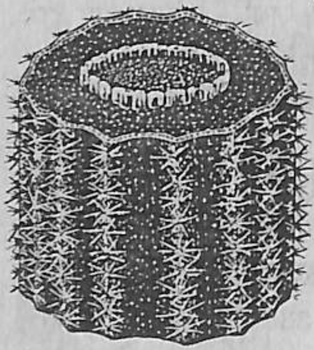

ऐसे पौधे जिनकी पत्तियाँ काफी बड़ी हैं जैसे अकाव, पानी की हानि रोकने के लिए इनकी पत्तियों की दोनों सतहों पर रोएँ होते हैं और मोम की पर्त चढ़ी होती है। नतीजतन प्रकाश का परावर्तन हो जाता है और पत्तियाँ ज्यादा गर्म होने से बच जाती हैं। कांटाथूअर (दूधी) की अक्सर बागड़ लगाई जाती है। इसमें पत्तियाँ सिर्फ बरसात में एक-दो महीने ही इसके तन पर दिखाई देती हैं। मुसीबत के दिन आने से पहले ही इनकी विदाई हो जाती है। इस तरह पौधा 10 महीने बिना पत्ती के बिताता है। क्या करें, पानी जो बचाना है।

कुछ पौधों को अपनी पत्तियों से ज्यादा लगाव होता है। ये उन्हें गिराने के बजाय सूखे के दिनों में घड़ी की कमानी की तरह गोल मोड़ लेते हैं। इस तरह उनके वायु-छिद्र अंदर की तरफ बंद हो जाते हैं और वाष्प उड़ाने वाली सतह अपने आप ढक जाती है। ऐमोफिला में ऐसा ही होता है। इसकी पत्तियों में, घड़ी करने में उसकी मदद के लिए बाकायदा विशेष प्रकार की कोशिकाओं का विकास हुआ है। गर्मी से बचने के लिए कैलिफोर्निया की रेगिस्तानी झाड़ी ऑक्टोस्टेफाइलोस की पत्तियाँ हमेशा सीधी खड़ी रहती हैं और वे गर्म होने से बच जाती हैं। रेगिस्तान के खास बाशिन्दों खेजड़ा, बबूल व प्रोसोपिस की पत्तियों का छोटा आकार इन्हें पानी की कमी से निपटने व धूप में झुलसने से बचाता है। पत्तियों का आकार घटते-घटते झाऊ (केजूराइना) में इतना कम हो गया है कि उन्हें पत्ती कहने के पहले सोचना पड़ता है। पत्तियों की अनुपस्थिति में इसकी शाखाएँ सुईनुमा व हरा रंग धारण कर भोजन बनाने का काम करती हैं।

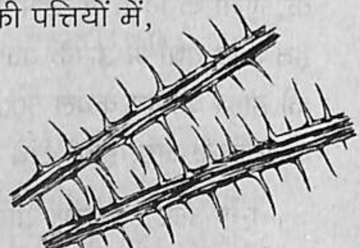

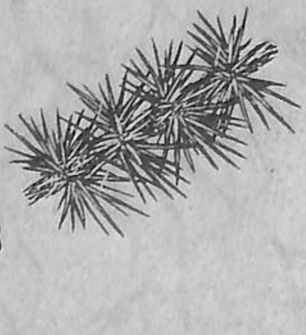

विकास के दौरान सूखे व गर्मी से बचने और जूझने के लिए कैसे-कैसे परिवर्तन वनस्पतियों में हुए हैं; उनके ये कुछ उदाहरण भर हैं। तरीका कोई भी हो, सवाल तो रेगिस्तान में पानी बचाकर जीने का है। लगता है पौधे भी जानते हैं कि बिन-पानी सब-सून।

चित्र : लाइफ नेचर लायब्रेरी की 'द डेज़र्ट' से साभार।

तुमने लिखा

फरवरी, 2000 के अंक में दिए चित्रों के आधार पर तुमको कहानी या कविता लिखना थी। हमारे पास कई रचनाएँ आईं उनमें से कुछ यहाँ दे रहे हैं।

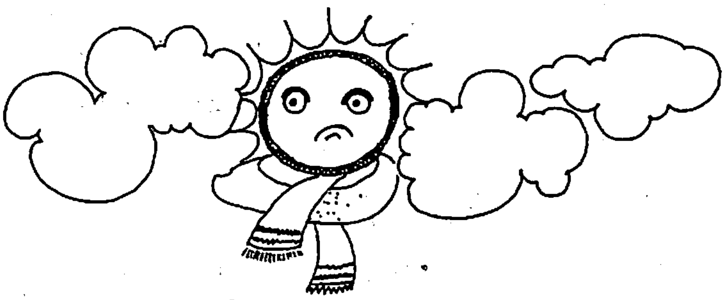

सर्दी का मौसम

सर्दी का मौसम था। सुबह का समय था। सूर्य बादलों से ढका-सा था। इतनी सर्दी थी कि मानो सूर्य भी मफलर बाँधे हो। ठण्डी हवा चल रही थी। पहाड़ बर्फ से ढके हुए थे। अभी चिन्टू सोकर नहीं उठा था। उसकी मम्मी ने उसको उठाया। जैसे-तैसे चिन्टू बड़ी मुश्किल से उठा। उसकी मम्मी ने उससे कहा - चलो बेटा, जल्दी से तैयार हो जाओ। स्कूल जाना है। चिन्टू ने मुँह बनाते हुए कहा - मम्मी बहुत सर्दी है। आज स्कूल नहीं जाऊँगा। मम्मी ने कहा - ठीक है मत जाओ। धूप निकल आई है। चलो अपनी छोटी बहन रिंकी को छत पर ले जाओ। और चटाई बिछाकर, कंबल ओढ़कर बैठकर धूप सेंक लो। चिन्टू अपनी छोटी बहन को लेकर छत पर गया। और चटाई बिछाकर व कंबल ओढ़कर बैठ गया। दोनों भाई बहिन घंटों बातें करते रहे। जब बातें करते-करते ऊब गए तो छत से नीचे उतर आए।

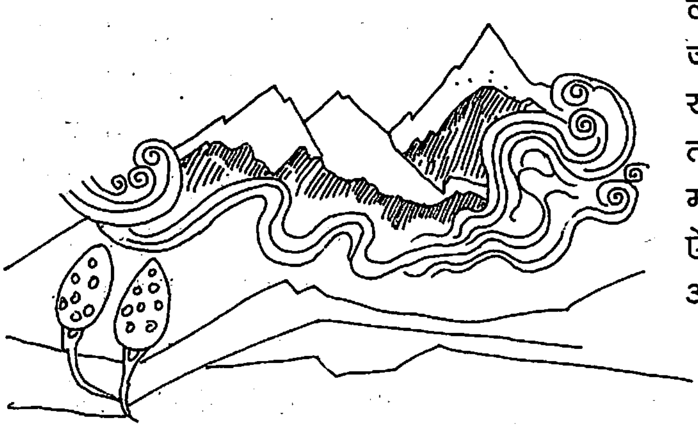

माँ ने चिन्टू से कहा - चलो बेटा, नहा लो। चिन्टू ने कहा - माँ इतनी सर्दी में मैं नहीं नहाऊँगा। माँ ने उसको ज़बरदस्ती नहाने के लिए बिठाया। चिन्टू ने पानी छूआ तो बहुत ठण्डा लगा। चिन्टू ने कहा - मम्मी पानी तो बहुत ठण्डा है। मैं नहीं नहाऊँगा। ऐसा सुनकर मम्मी को गुस्सा आ गया और चिन्टू में 2-3 चाँटे जमा दिए। अब चिन्टू का मुँह फूल गया और मम्मी के डर से जल्दी-जल्दी नहा लिया। नहाने के बाद उसको भूख लगी। उसने सोचा कि कुछ गरमा-गरम खाना खाया जाए। जब वो रसोई में पहुँचा तो मम्मी के गुस्से से लाल चेहरे को देखकर खाना नहीं माँग पाया। उसको बहुत तेज भूख लग रही थी। तो रोने लगा। और पलंग पर जाकर सो गया। उसको सपने में कई प्रकार के खाने के व्यंजन दिखाई देने लगे। जब वह उठा तो उससे रहा नहीं गया और मम्मी से कहा - मम्मी बहुत भूख लगी है। जल्दी से खाना दो। ऐसा सुनकर मम्मी ने उसको गले लगा लिया। और खूब अच्छा खाना खिलाया।

● सोहित अग्रवाल, आठवीं, छतरपुर, म.प्र.

आई सर्दी आई

खत्म हुआ बारिश का मौसम,
आई सर्दी आई।
सूरज की भी नहीं चली अब,
शाल ओढ़ बैठा है भाई।
आई सर्दी आई...
चलने लगी हवाएँ ठण्डी,
पेड़ हुए हैं गुमसुम भाई।
आई सर्दी आई...
राहुल और पापा बैठे हैं,
देखो ओढ़ रजाई।
आई सर्दी आई...
पानी से डर लगता है मुझको।
गर्म चाय और गाजर भायी।
आई सर्दी आई...
हम भाई बहिन मिलकर
धूप में करें पढ़ाई।
आई सर्दी आई...

● रितु चौबे, दसवीं, भोपाल, म.प्र.

जाड़े का मौसम

जाड़े का मौसम था बड़ा ही रंगीला।
कभी ठण्डी हवा चलती, कभी गिरता कोहरा।
चारों तरफ धुँध ही धुँध।
किसी को नहीं उठने की सुध।
पानी को कोई भी हाथ नहीं लगाता।
देख पानी को दूर भाग जाता।
हम छुप गए रजाई में
सूरज छुप गया बादलों के बीच में।
बच्चों की आई शामत
किसी को नहीं है, उठने की फुर्सत।
चारों तरफ है कोहरा,
सूरज नजर नहीं आता है।
देख सूरज ठण्डी हवा बादलों में छुप जाता है।
कोई देखता सपने जाड़े के मौसम में।
कोई दिन भर बैठा रहता है रजाई भारी भरकम में।
जाड़े का मौसम था बड़ा ही रंगीला।

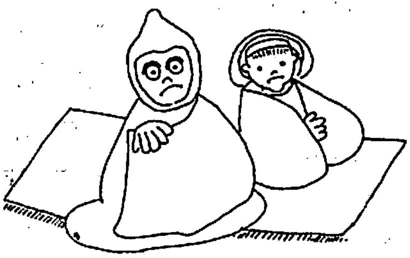

● राकेश गुप्ता, बालागुड़ा, मन्दसौर, म.प्र.

सर्दी का मौसम

सूरज शाल लपेटे बैठा,
चला हवा का ऐसा झोंका
पहाड़ों पर चल रही हवा है,
इनको भी लग रही है सर्दी
मैं भी बैठा शाल लपेटे,
साथ में दादा जी भी बैठे।
नहाने से डर इतना लगता,
पानी से मैं दूर हूँ भागता।
सपने में मैं देखूँ गाजर,
चाय, कॉफी, लाल टमाटर।

● राहुल चौबे, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

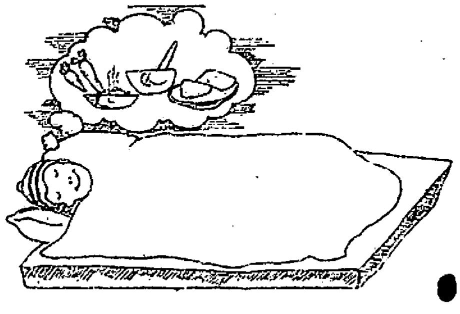

● सभी चित्र : धनंजय

बुलबुले बनाओ

साबुन-पानी में नली डालकर, फूँक-फूँककर बुलबुले बनाने का खेल तो तुमने ज़रूर खेला होगा। न खेला हो तो तुरन्त बनाकर देखो बुलबुले। बहुत मज़ा आएगा।

- एक गिलास या मग्गे में पानी लेकर उसमें काफी सारा साबुन घोल लो। इतना कि हाथ लगाने पर पानी लसलसा लगे। फिर कोई भी शरबत पीने की नली या पपीते की पोली डंगाल जैसी चीज़ ले लो। एक सिरा साबुन-पानी में डुबोकर दूसरे सिरे से उसमें फूँको। देखो कैसे ढेर सारे बुलबुले बनते हैं। इन्हें उड़ाने का तरीका तुम खुद ढूँढ निकालो।

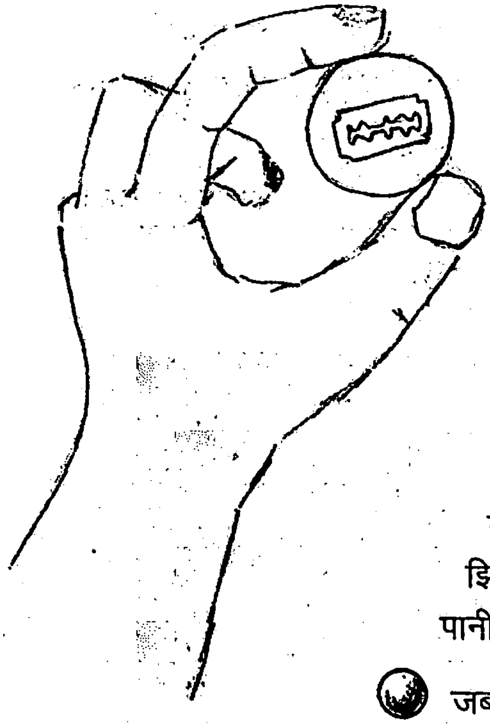

चूड़ी में बुलबुला

- चलो साबुन-पानी से कुछ और मज़ेदार खेल खेलते हैं। एक प्लास्टिक या काँच की चूड़ी, एक धागे का टुकड़ा और एक ब्लेड ले लो। चूड़ी थोड़े बड़े आकार की होनी चाहिए ताकि उसके घेरे में एक ब्लेड आ जाए।
- चूड़ी के एक सिरे पर धागा बाँध दो। अब धागे से पकड़कर चूड़ी को साबुन-पानी में डुबाओ। धीरे से उसे बाहर निकालकर देखो। चूड़ी के घेरे में साबुन पानी की एक झिल्ली बन गई होगी। न बनी हो तो चूड़ी को दुबारा साबुन-पानी में डालकर सावधानी से बाहर निकालो।
- जब चूड़ी के घेरे में झिल्ली बन जाए तो उसे आड़ा पकड़कर धीरे से उस पर ब्लेड रखो। ध्यान रखना कि ब्लेड रखते समय कहीं तुम्हारी उँगली से झिल्ली न छू जाए, नहीं तो वह फूट जाएगी।
- देखा, इतनी पतली झिल्ली ने भी ब्लेड का वज़न सम्भाल लिया।

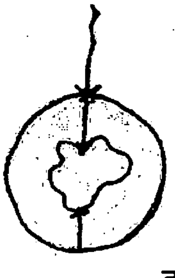

बुलबुले में छेद

इस खेल के लिए तुम्हें धागे से बँधी चूड़ी के अलावा कुछ और धागे की ज़रूरत होगी। धागे में एक छोटा छल्ला बनाकर गठान बाँध लो। इस छल्ले के दोनों ओर छोटे-छोटे धागे के दो टुकड़ों की मदद से इसे चूड़ी के बीच में बाँध दो। चित्र में देखो कैसे।

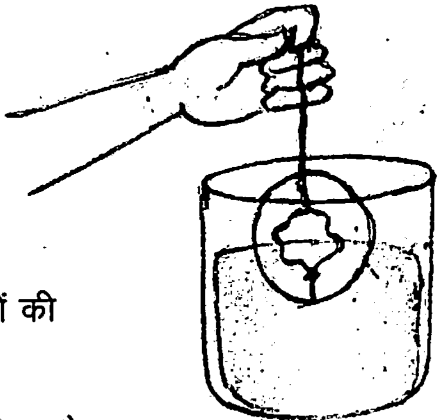

अब इस छल्ले वाली चूड़ी को साबुन पानी में डुबोकर बाहर निकालो। तुम देखोगे कि छल्ले ने चूड़ी में एक आड़ा-तिरछा, बेतरतीब आकार ले लिया है। अब सावधानी से साबुन पानी की झिल्ली को धागे के छल्ले के बीच से फोड़ दो। इसके पहले ध्यान रखना कि तुम्हारी उँगलियाँ साफ और सूखी हुई हों। अगर वह साबुन पानी के कारण चिकनी हो रही हों तो फिर झिल्ली नहीं टूटेगी।

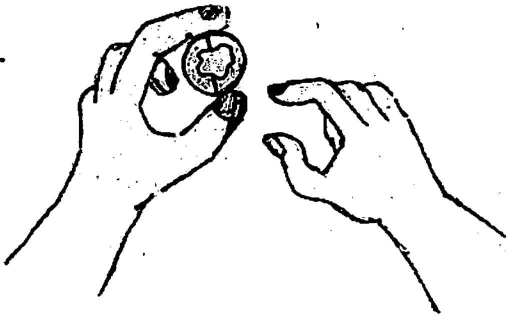

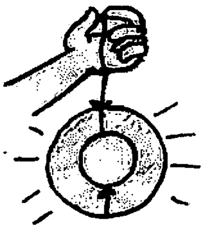

जैसे ही धागे के छल्ले के बीच की झिल्ली फूटती है, तो क्या हुआ? देखा तुमने। तुम यह प्रयोग कई बार आजमाकर देखो। क्या हर बार ऐसा ही होता है? क्या-क्या देखा तुमने? हमें चिट्ठी लिखकर बताना।

●सभी चित्र : शहला खान

मई, 2000 के माथापच्ची के हल

1. ▲ = 6, क = 1
2. कथा – रोकथाम
   नव – जानवर
   पल – चपलता
   लट – पलटन
   कर – मुकरना, प्रकरण
   वारि – लावारिस
3. बड़े वर्ग का क्षेत्रफल छोटे वर्ग से दोगुना होगा।
4. 31 जनवरी को ही राम से मिल सकता है। बाकी माहों में 31 दिन नहीं होते।
5. 'ग' गोला ज़्यादा हिस्सों में बँटा है।
6. कम से कम 21 नीबू तोड़ना होगा।
7. सात चालों में सफेद और काली गेंद फिर से 'ग' बिन्दु पर आएँगी।

वर्ग पहेली 105 का हल

रा	त		क	पि		चा	ची	
	था	ली		न	दी		कू	क
ख		ची	ला		वा	दी		म
ड़			ख		र	वा		र
ख	न	क				ना	ट	क
ड़ा		बा	ल		आ			स
ह		ब	ड़ा		म़	ही		ना
ट	न		ई	द		रा	स	
	फा	का		शा	न		मां	द

वर्ग पहेली 105 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं – राजू कुमार, मोतीहारी, बिहार। नुपुर भाटिया, लखनऊ; मनु पाण्डे, अल्मोड़ा, अलिन्द उपाध्याय, काशीपुर, नैनीताल; उ.प्र.। आरती चौहान, टिमरनी, होशंगाबाद; विनोद कुमार सोनी, गढ़ाकोटा, सागर; खुरशीद अनवर राही, जावद, नीमच; म.प्र.। मुनीष कुमार वधवा, नई दिल्ली। इन्हें जून, 2000 का अंक भेजा जा रहा है।

प्यारा कुनबा

निकोलाई नोसोव

अब तक तुमने पढ़ा कि मीश्का हमेशा कुछ नया करना चाहता है। उसे मुर्गी-पालन नाम की एक किताब मिलती है। वह अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्यूबेटर (मुर्गी के अण्डे को सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है। शुरू में कुछ अड़चनों को पार करने के बाद दोनों मिलकर ताज़े अण्डे लेने गाँव जाते हैं। वहाँ नताशा मौसी से मुर्गी के ताज़े अण्डे लेकर वे लौट आते हैं। और अब आगे . . . .

शुरूआत

दूसरे दिन स्कूल से आने के साथ हमने इन्क्युबेटर में अण्डे रख दिए। उनके लिए वहाँ काफी जगह थी, इतना ही नहीं। कुछ जगह खाली भी रह गई।

हमने इन्क्युबेटर पर ढक्कन लगाया, तापमापी को ठीक जगह पर रख दिया और अब लैम्प का बटन दबाने ही वाले थे कि मीश्का बोला, ''ठहरो, पहले ज़रा यह देख लें कि सब ठीक हुआ है या नहीं। शायद, इन्क्युबेटर को गरम करने के बाद अण्डों को अन्दर रखना होगा।''

''मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता,'' मैंने कहा। ''देखें, पुस्तक में क्या लिखा है।''

मीश्का ने पुस्तक उठाई और पढ़ने लगा। देर तक पढ़ने के बाद वह बोला, ''देखा, हम उनका दम घोंटने जा रहे थे।''

''किनका?''

''अण्डों का। पता चला कि वे जानदार हैं।''

''जानदार हैं?'' मैने आश्चर्य से पूछा।

''हाँ, हाँ। देखो पुस्तक में क्या लिखा हुआ है। 'अण्डों में यद्यपि जीवन प्रत्यक्ष नहीं दिखाई देता, तो भी वे सजीव होते हैं। जीवन अभी अदृश्य होता है। लेकिन अण्डे को गरमी मिलने से उसमें चेतना आ जाती है, धीरे-धीरे भ्रूण बच्चे का आकार धारण करने लगता है और अन्त में छोटा-सा बच्चा निकल आता है। सभी प्राणियों की तरह अण्डे भी साँस लेते हैं...' समझे! अण्डे साँस लेते हैं – बिल्कुल हमारी-तुम्हारी तरह।''

''बकवास!'' मैंने कहा। ''हम तो मुँह से साँस लेते हैं। भला, अण्डे किससे साँस लेते हैं?''

''धत्, हम मुँह से नहीं, फेफड़ों से साँस लेते हैं। हवा मुँह से होकर फेफड़ों में ही जाती है। अण्डों में खोल से होकर हवा जाती है और इस तरह वे साँस लेते हैं।''

''ठीक है, वे साँस लेना चाहते हैं, तो लें'' मैंने कहा। ''हम थोड़े ही उन्हें मना करते हैं।''

''लेकिन बंद पेटी में वे कैसे साँस ले सकते हैं? सुनो, साँस लेते समय हम कार्बन डायऑक्साइड छोड़ते हैं। अगर तुम्हें पेटी में बंद करके रखा जाए, तो तुम ताज़ा हवा नहीं पा सकोगे। तुम कार्बन डायऑक्साइड छोड़ते जाओगे और आखिर वह इतना ज़्यादा हो जाएगा कि तुम्हारा दम घुट जाएगा।''

''मैं क्यों पेटी में बंद होने लगा? मैं दम घुटकर

मरना नहीं चाहता,'' मैंने कहा।

''बिल्कुल ठीक, और यही बात अण्डों के बारे में है। लेकिन हमने तो उनको पेटी में बंद किया है।''

''तो अब हमें क्या करना चाहिए?''

''पेटी में हवा के आने-जाने का प्रबंध करना है,'' मीश्का ने कहा। ''सभी सचमुच के इनक्युबेटरों में हवा के आने-जाने का प्रबंध होता है।''

अण्डों में से एक भी न टूट जाए, इसकी सावधानी रखते हुए हमने उनको बक्से से निकाला और फिर टोकरी में रख दिया। मीश्का एक बरमा लाया और उससे इनक्युबेटर में कई छोटे-छोटे छेद कर दिए, ताकि उनमें से होकर कार्बन डायऑक्साइड बाहर निकल जाए।

जब यह काम पूरा हो गया, तो हमने अण्डों को फिर पेटी में रखा और ढक्कन लगा दिया।

''सिर्फ एक मिनट,'' मीश्का बोला। ''अब तक हमें यह नहीं मालूम हुआ है कि पहले क्या करना चाहिए - इनक्युबेटर को गरम करना या अण्डों को रखना।''

उसने फिर पुस्तक का सहारा लिया।

''हम अब भी गलती कर रहे हैं,'' कुछ देर बाद उसने कहा। ''यहाँ लिखा हुआ है कि इन्क्युबेटर के भीतर की हवा नम होनी चाहिए, क्योंकि अगर वह सूखी रही, तो अण्डे के अन्दर का तरल पदार्थ भाप बनकर खोल से उड़ जाएगा और भ्रूण नष्ट हो जाएगा। इसलिए इनक्युबेटर में पानी से भरे कटोरे रखने चाहिए। पानी की भाप बनती जाएगी और उससे हवा नम रहेगी।''

हमने अण्डों को फिर बाहर निकाला और पानी के गिलास अन्दर रखने लगे। लेकिन वे इतने लम्बे थे कि ढक्कन लगाना असम्भव हो गया। हम किसी छोटे बर्तन की तलाश करने लगे; लेकिन हमें कुछ नहीं मिला। तभी मीश्का को याद आया कि उसकी छोटी बहन माया के खिलौनों में लकड़ी की कुछ कटोरियाँ हैं।

''हम माया की कुछ कटोरियाँ ले लें तो?'' उसने कहा।

''वाह, क्या बात है!'' मैंने कहा। ''जाओ, ले आओ।''

मीश्का ने माया के खिलौने ढूँढकर, उनमें से लकड़ी की चार कटोरियाँ चुन लीं। वे आकार में बिल्कुल ठीक निकलीं। हमने उनको पानी से भरकर इन्क्युबेटर के भीतर, हर कोने में एक-एक करके रख दिया। लेकिन जब हम अण्डों को फिर से रखने लगे, तो देखा कि अब वहाँ सिर्फ बारह अण्डों की जगह थी। तीन अण्डे बाकी रह गए।

''कोई बात नहीं,'' मीश्का बोला। ''बारह चूज़े भी काफी होंगे। ज़्यादा का हम क्या करेंगे? उनको खिलाने के लिए हमारे पास इतना दाना भी तो होना चाहिए।''

इसी समय माया अन्दर आई और जब उसने देखा कि उसकी कटोरियाँ इन्क्युबेटर में हैं, तो वह चीखने-चिल्लाने लगी।

''सुनो,'' मैंने कहा। ''हम इन्हें सदा के लिए तो ले नहीं रहे। आज से इक्कीस दिन बाद ये तुम्हें वापस मिल जाएँगी। तुम चाहो, तो उनके बदले हम तुम्हें तीन अण्डे अभी दे सकते हैं।''

''अण्डे लेकर मैं क्या करूँगी? वे तो खाली हैं!''

''नहीं, खाली नहीं हैं। उनमें ज़रदी, सफेदी सभी कुछ तो है।''

''लेकिन उनमें चूज़े तो नहीं हैं, न!''

''देखो, जब अण्डों में से चूज़े निकल आएँगे, तो हम तुम्हें एक दे देंगे।''

''सच्ची-मुच्ची?''

''हाँ, सच्ची। लेकिन अब यहाँ से भाग जाओ और हमें परेशान न करो। हम वैसे ही मुश्किल में हैं कि शुरू कैसे करें। हमारी समझ में यह नहीं आ रहा कि अण्डे रखने के बाद इन्क्युबेटर को गरम किया जाए या इनक्युबेटर को गरम करने के बाद अण्डे रखे जाएँ।''

मीश्का ने फिर पुस्तक देखी और जाना कि यह किसी भी तरह से किया जा सकता है।

''बहुत ठीक,'' मैं बोला। ''चलो, बिजली का बटन दबाओ और काम शुरू करें।''

''मुझे ज़रा घबराहट हो रही है,'' मीश्का ने कहा। ''लैम्प तुम जलाओ, तो ज़्यादा ठीक रहेगा, क्योंकि मेरी किस्मत हमेशा खोटी रहती है।''

''तुम ऐसा क्यों सोचते हो?''

''बस, किस्मत ही खोटी है और क्या। मेरा किया कोई काम कभी पूरा नहीं होता।''

''मेरी भी यही बात है,'' मैंने कहा। ''मेरी किस्मत भी हमेशा खराब रहती है।''

अब हम दोनों को वे सभी बातें याद आने लगीं, जो हमारे जीवन में घटी थीं, और आखिर यह सिद्ध हुआ कि दोनों बड़े अभागे रहे हैं।

''ऐसे काम को हममें से किसी को शुरू करने का कोई फायदा नहीं होगा,'' मीश्का ने कहा। ''वह हर हालत में बिगड़ जाएगा।''

''हम माया से जो करवा लें,'' मैंने कहा।

मीश्का ने अपनी बहन को अन्दर बुलाया।

''सुनो माया,'' मैंने कहा। ''क्या तुम किस्मतवाली हो?''

''हाँ-हाँ।''

''तुम्हारा कभी कोई काम अधूरा रहा है?''

''नहीं, कभी नहीं।''

''बड़ी अच्छी बात है! देखो माया, पेटी में वह लैम्प है, न?''

''हाँ।''

''ठीक, तुम ज़रा उसका बटन तो दबा दो।''

माया इन्क्युबेटर के पास गई और उसने बटन दबा दिया।

''कुछ और?'' उसने पूछा।

''कुछ नहीं,'' मीश्का बोला। ''अब भाग जाओ और हमें तंग मत करो।''

माया नाराज़ होकर चली गई। हमने जल्दी-जल्दी ढक्कन लगाया और तापमापी को देखना शुरू किया। पहले पारा 18 डिग्री पर ही रुका रहा, लेकिन धीरे-धीरे वह बढ़ने लगा और 20 डिग्री तक पहुँच गया। इसके बाद ज़रा तेज़ी से बढ़कर वह 25 डिग्री तक चला गया, लेकिन 30 डिग्री होने पर वह फिर धीमी चाल से बढ़ने लगा। आधे घंटे में वह 36 डिग्री तक चढ़ गया और फिर वहीं रुक गया। मैंने लैम्प के नीचे एक और पुस्तक रख दी, जिससे पारा फिर चढ़ने लगा। वह 39 डिग्री तक चढ़ गया और फिर चढ़ता ही चला गया।

''ठहरो!'' मीश्का चिल्लाया। ''देखो, वह 40 डिग्री हो गया है। यह किताब ज़्यादा मोटी है।''

मैंने पुस्तक निकाल ली और उसके बदले एक पतली पुस्तक रख दी। पारा नीचे आने लगा। वह 39 डिग्री तक आ गया, और भी गिरता रहा।

''यह बहुत पतली है,'' मीश्का बोला। ''ठहरो, मैं एक कॉपी ले आता हूँ।''

वह दौड़कर एक कॉपी लाया और उसे लैम्प के नीचे घुसा दिया। पारा फिर से चढ़ने लगा, 39 डिग्री तक गया और वहीं रुक गया। हमने तापमापी पर आँखें गड़ाए रखीं। पारा अचल खड़ा था।

''वह रहा,'' मीश्का फुसफुसाया। ''यही ताप हमें इक्कीस दिन तक लगातार कायम रखना है। क्या ख्याल है, हम रख लेंगे?''

''बेशक, रख सकते हैं,'' मैंने कहा।

''क्योंकि अगर हम नहीं रख सके, तो हमारा सारा काम बेकार हो जाएगा।''

''लेकिन हम ज़रूर रखेंगे। किसने कहा कि हम नहीं रख पाएँगे!''

सारे ही दिन हम इन्क्युबेटर के पास बैठे रहे। हमने स्कूल का अभ्यास तक तापमापी पर नज़र रखे-रखे ही किया। वह 39 डिग्री पर था।

''सब कुछ ठीक चल रहा है,'' मीश्का ने सहर्ष कहा। ''अगर हमने इसे कायम रखा, तो ठीक इक्कीस दिन बाद हमें चूज़े मिल जाएँगे। ज़रा सोचो तो, बारह नन्हें-नन्हें रोएँदार चूज़े! कैसा प्यारा कुनबा होगा उनका!''

(अगले अंक में जारी)

● सभी चित्र : सौरभ दास

खेल दुनिया भर के

इस बार

बास्केट बॉल

सचिन तेंदुलकर ... । हममें से कितने ही लोगों का हीरो होगा!

लेकिन क्या तुम्हें मालूम है कि सचिन तेंदुलकर का हीरो कौन है! सचिन तेंदुलकर का हीरो क्रिकेट नहीं खेलता....! वह है बास्केट बॉल का जाँबाज खिलाड़ी.....माइकल जॉर्डन!

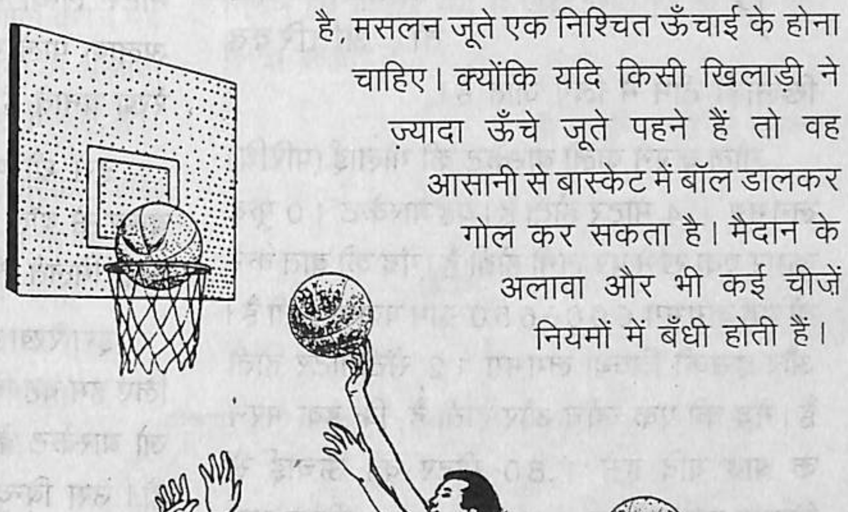

बास्केट बॉल वर्षों से यूरोप और अमेरिकी महाद्वीप का लोकप्रिय खेल रहा है। यह अमेरिका का राष्ट्रीय खेल भी है।

बास्केट बॉल एशिया महाद्वीप में भी तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। शायद इसलिए भी कि न तो इसके लिए क्रिकेट, हॉकी या फुटबाल की तरह लम्बे-चौड़े मैदान की ज़रूरत होती है और न ही यह खर्चीला खेल है। न ही यह क्रिकेट की तरह पूरे के पूरे दिन लम्बा चलता है। बास्केट बॉल के एक मैच के लिए बस आपको चाहिए पचास मिनिट।

मोटे तौर पर देखें तो एक टीम के खिलाड़ी दूसरी टीम के खिलाड़ियों को छकाते हैं और विरोधी टीम के पाले की बास्केट में बॉल डालकर गोल करते हैं। हो सकता है तुम भी इसी तरीके से बास्केट बॉल खेलते होगे! लेकिन प्रतियोगिताओं में हर चीज़ का ध्यान रखा जाता है, मसलन जूते एक निश्चित ऊँचाई के होना चाहिए। क्योंकि यदि किसी खिलाड़ी ने ज़्यादा ऊँचे जूते पहने हैं तो वह आसानी से बास्केट में बॉल डालकर गोल कर सकता है। मैदान के अलावा और भी कई चीज़ें नियमों में बँधी होती हैं।

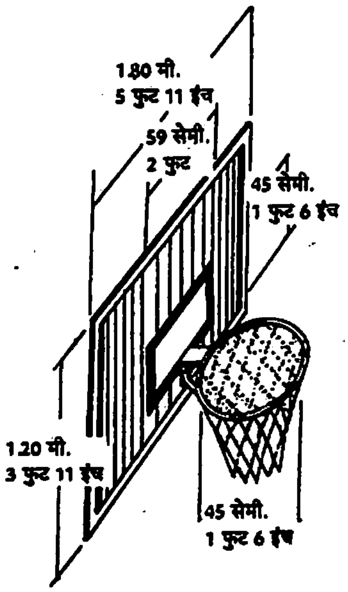

चलो पहले बात टीम के खिलाड़ियों से शुरू करते हैं। एक टीम में पाँच-पाँच खिलाड़ी होते हैं और पाँच-पाँच अतिरिक्त होते हैं। मैच के दौरान यदि कोई खिलाड़ी घायल हो जाता है तो अतिरिक्त खिलाड़ी टीम में लिए जाते हैं।

गोल करने वाली बास्केट की गोलाई (परिधि) लगभग 1.4 मीटर होती है। यह बास्केट 10 फुट ऊपर एक खंभे पर लगी होती है। गेंद की बात करें तो यह लगभग 600–650 ग्राम वजनी होती है। और इसकी त्रिज्या लगभग 12 सेंटीमीटर होती है। गेंद की एक जाँच और होती है, कि हवा भरने के बाद यदि इसे 1.80 मीटर की ऊँचाई से गिराया जाए तो यह 1.20 से 1.40 मीटर तक उछले।

मैदान समतल सपाट और सख्त होना चाहिए। बड़ी-बड़ी प्रतियोगिताओं में घास वाले मैदान पर बास्केट बॉल नहीं खेला जाता है। मैदान 15 मीटर चौड़ा और 28 मीटर लम्बा होता है।

मैदान के बीच में एक लाइन खींचकर इसे दो पालों में बाँटते हैं। यानी यह मध्य रेखा होती है। इसके अलावा भी बहुत कुछ होता है एक पाले में!

मैदान की चौड़ाई रेखा के ठीक बीच से मध्य रेखा की ओर 5.80 मीटर दूरी तक एक टूटी रेखा खींची जाती है।

इस रेखा के मध्य रेखा की तरफ के सिरे को केंद्र मानकर 1.80 मीटर की त्रिज्या का एक गोला बनाते हैं। इस गोले को एक रेखा से दो भागों में बाँटते हैं। यह रेखा इस तरह खींचते हैं कि मध्य रेखा के समांतर हो। इसे फ्री थ्रो रेखा कहते हैं। चौड़ाई रेखा के बीच से 3–3 मीटर की दूरी पर दोनों तरफ दो बिन्दु उकेरते हैं। इन बिन्दुओं को फ्री थ्रो रेखा के दोनों सिरों से मिलाते हैं।

अब चौड़ाई रेखा के दोनों सिरों से 1.25–1.25 मीटर छोड़कर मध्यरेखा की ओर 5.8 मीटर लम्बी दो सीधी रेखाएँ खींचते।हैं इसके अलावा पाले में एक और 'डी' आकार की वक्र रेखा बनाते हैं।

इसे थ्री प्वाइंट रेखा कहते हैं, यानी इसके बाहर से बॉल को बास्केट में डालने पर पूरे तीन अंक मिलते हैं।

इस रेखा को बनाने के लिए हम वह बिन्दु ढूँढ़ते हैं जो बास्केट के ठीक नीचे हो। उस बिन्दु से 6.25 मीटर की त्रिज्या लेकर एक चाप डालते हैं।

इस चाप के दोनों सिरों को 5.8 मीटर खींची रेखाओं से मिलाते हैं।

इसी तरह दूसरे पाले में भी रेखाएँ और 'डी' बनाते हैं।

जब मैच स्थानीय और बाहर से आई किसी टीम के बीच होता है तो टॉस किए बगैर बाहर से आई

टीम को पाला चुनने का मौका मिलता है। लेकिन ओलम्पिक या और भी कई बड़ी प्रतियोगिताओं में कई टीम बाहर से आती हैं।इसलिए वहाँ पाले के चुनाव के लिए टॉस होता है।

हॉकी की तरह बास्केट बॉल में हर एक गोल के लिए एक ही अंक नहीं मिलता। बल्कि इसमें मैदान की अलग-अलग पोजीशन से गोल करने पर अलग-अलग अंक मिलते हैं। जैसे फ्री थ्रो लाइन से गोल करने पर हमेशा एक अंक ही मिलेगा। थ्री प्वाइंट रेखा के बाहर से यानी मध्य रेखा और फ्री थ्रो लाइन के बीच से गोल करने पर तीन अंक मिलते हैं। इन दोनों स्थितियों के अलावा कहीं से भी गोल करने पर दो अंक मिलते हैं।

तो चलो खेलना शुरू करते हैं।बास्केट बॉल बास्केट बॉल की शुरूआत मध्य रेखा के गोले में रेफरी गेंद उछालकर करता है। कोई भी खिलाड़ी उछलकर गेंद पकड़ सकता है। और फिर छकाते हुए गोल कर सकता है। जब फाऊल होता है या नियम का उल्लंघन होता है तो वह स्थान जहाँ पर नियम टूटा है, वहाँ से सबसे पास के गोले में रेफरी बॉल उछालता है। और फिर खेल शुरू होता है। गोल शुरू होने के बाद भी गेंद इसी तरह जम्प की जाती है। इसे बास्केट बॉल की शब्दावली में जम्प-बॉल कहते हैं! कभी-कभी ऐसा भी होता है जब दो खिलाड़ी बॉल को कसकर पकड़ लेते हैं तब भी रेफरी जम्प बॉल का निर्णय लेता है।

तो ये थी बास्केट बॉल की मोटी-मोटी जानकारी। अगली बार फिर किसी रोमांचक खेल के बारे में बात करेंगे। हाँ अगर तुम किसी खेल के बारे में चकमक में जानकारी चाहते हो या किसी नियम को लेकर मन में कोई बात हो तो हमें भी लिख सकते हो।

● प्रस्तुति : सुशील शुक्ला

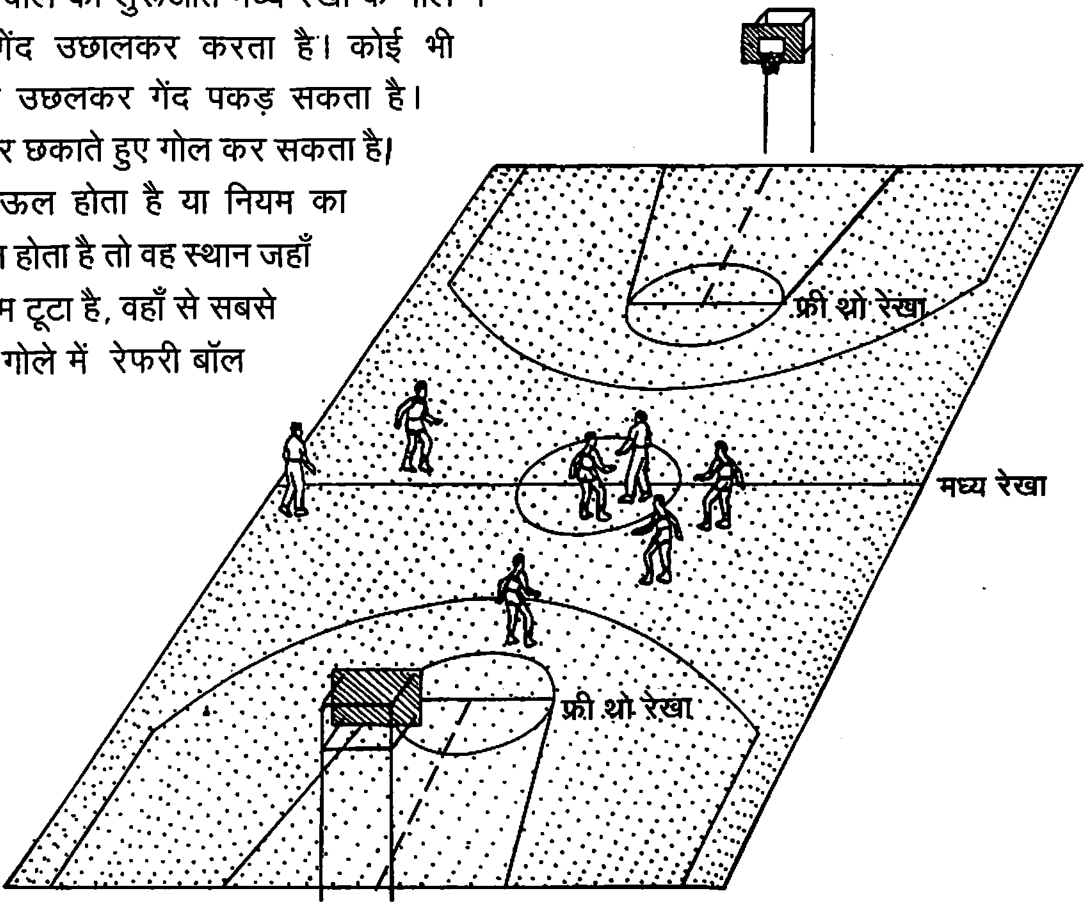

मैं घुन्ना था!

न मैं मुन्ना था न मैं चुन्ना था
साथियों के लेखे मैं घुन्ना था
न बोलता था न खेलता था
न एक को दूसरे के ऊपर ढकेलता था
दूसरे सब चिल्ला रहे थे खेल रहे थे
लगातार एक को दूसरे पर
ढकेल रहे थे!

मगर फिर थक गए सब
मुझे घेर कर बैठ गए तब
बोले! सुनता है अबे घुन्ने
हमें हैं तुझसे गीत सुनने
तू दूर से उठकर और पास आएगा
हमें कोई अच्छा गीत सुनाएगा!

गीत तो मुझे आते थे
हम भाई-बहन रोज़ मिलकर गाते थे
वंदे मातरम्!
तो मैंने गाना शुरू कर दिया
आसमान वंदे मातरम् से भर दिया

सारे लड़के खड़े हो होकर नाचने लगे
साथ-साथ वंदे मातरम् की
कड़ियाँ बाँचने लगे
और भले ही
मैं मुन्ना या चुन्ना नहीं था
उन्होंने तय कर दिया
कि मैं घुन्ना नहीं था!

● भवानी प्रसाद मिश्र
● चित्र : धनंजय

पिटारा उत्सव में मैंने देखा

आज नहाने के पश्चात् मुझे एकलव्य का ऑफिस याद आया। मतलब जो पर्चा मैंने घर में देखा था जिसमें लिखा था कि 29 और 30 अप्रैल को वहाँ कुछ बच्चों के खेल होंगे। मैंने फिर तुरन्त पापा से पूछा पापा, आज तारीख क्या हैं? पापा ने कहा 29. फिर मुझे लगा अरे, आज ही का दिन तो है। मैंने पापा से कहा कि आज चार से सात बजे तक एकलव्य का प्रोग्राम है। पापा ने कहा चले जाना बंटी छोड़ देगा।

ठीक चार बजे हम एकलव्य के बालमेले में पहुँचे। वहाँ मुझे टुलटुल दीदी दिखी। उन्होंने पूछा, कैसी हो? अच्छा किया आ गई। उन्होंने आगे कहा कि 'वहाँ सामने ग्राउंड है, वहीं मंडप लगा है। वहाँ बच्चे चित्र बना रहे हैं उन्हीं के पास जाओ।' वहाँ हम गए तो हमें कागज़ पेन्सिल और रबर दी गई। मैंने चित्र की शुरूआत की, पहले पेड़ बनाया। फिर मोम कलर की वजह से चित्र अच्छा नहीं लगा। मैंने दूसरी शीट ली। सोचा क्या बनाऊँ? मेरे सामने छोटी सी बच्ची बैठी थी। बड़ी प्यारी-सी बच्ची थी टोपा लगाए हुए। वह भी चित्र बना रही थी। मुझे वह इतनी अच्छी लगी कि मैं उसे कागज़ पर उतार डालूँ। मैंने सोचा उसका ही चित्र बनाती हूँ। उसको बनाने के बाद मैंने कुछ और बच्चों के चित्र बनाए और वहाँ जो दिख रहा था – कुर्सी, हाथी, खिलौने सबके चित्र बनाने के बाद उनको दे दिया। उन्होंने पूछा किस पर बनाया है। मैंने कहा , यहीं आस-पास पर बनाया है। उन्होंने कहा, बहुत अच्छा लग रहा है।

उधर ग्राऊंड पर कई स्टॉल लगे थे। कोई चित्र का, खेल का, मुखौटे का, मोर बनाने का। सभी अलग-अलग स्टॉल लगे थे। फिर हम मुखौटे बनाने बैठे। किससे बनाएँगे। वहाँ पर मिट्टी को गूँथा जा रहा था। कविता दीदी मिट्टी को आटे की तरह कूट रहीं थीं। हमने पूछा, ये कौन सी मिट्टी है? उन्होंने कहा, यह खड़िया मिट्टी है। अब इसमें फेवीकाल डालकर इसे अच्छी तरह मिलाएँगे। मुखौटे के स्टॉल में सिर्फ हम सबसे पहले आए थे। दीदी ने मुझसे कहा, टीना उठाओ और माड़ो। मैंने उठाया और गूँथने लगी। पूनम, नुपूर ने भी लिया। बहुत देर तक गूँथते रहे। थोड़ी देर में खूब बच्चे उस स्टॉल में जमा हो गए थे। सभी मिट्टी ठोंक रहे थे। सभी को बहुत मज़ा आ रहा था। पूनम कह रही थी ठीक से नहीं बन पा रहा है। मैंने बहुत देर तक मेहनत की मगर फिर वह मिट्टी टूटने लगी। उन्हीं लोगों ने कागज़ पर बिछाने के लिए कहा था। मैंने कोशिश करके उसी पर चिपका दिया। धीरे-धीरे करके एक चेहरा बना दिया कानों में बाली पहने हुए। फिर उन लोगों ने कहा कि इसे पीछे रख दो वरना टूट जाएगा। मैंने रखा तब कागज में छेद हो गया तो वह टूट गया। तो कविता दीदी हँसने लगी। हम दूसरे स्टॉल देखने लगे। एक स्टॉल पर हमें कमल मामा दिखे जो वहाँ मोर बनाना सिखा रहे थे। पूनम मोर बनाना सीखने लगी मगर अधूरा ही सीख पाई। भाषण शुरू होने वाला था। सब वहीं बैठ रहे थे। हम भी वहीं बैठ गए।

गर्मी के दिनों में जो बच्चे सिर्फ टीवी देखते रहते हैं, जिसमें दिमाग कुंद हो जाता है। उन्हें यहाँ कुछ हटके लगा होगा। और उनके लिए कुछ करने को मिला। क्योंकि वे तो कुछ करने की तलाश में ही रहते हैं, नहीं तो बोर होते हैं। कुछ सीखने को भी मिलेगा, मज़ा भी आएगा और सबसे बड़ी बात बोर न होंगे। यह कार्यक्रम सचमुच अच्छा लग रहा था। मैं पहले इतना लिखती थी तो मुझे बहुत लोग जानते भी हैं। और मैंने जो लिखने की आदत छोड़ दी है तो यह अच्छा नहीं है। मुझे लिखते रहना चाहिए। जिन्दगी रचनात्मक, रोमांचक है न कि बोरियत। उसमें हमेशा रंग भरना चाहिए, उमंग भरना चाहिए, रोमांच भरना चाहिए। रोमांच भरना हमारे हाथ में है। यहाँ आकर मुझे फिर से रोमांच भरा अहसास हुआ।

दूसरे दिन मैं वहाँ गई तो सबसे पहले चित्रकला के स्टॉल में गई। वहाँ मैंने चित्र बनाया। साथ में नुपूर, छोटू भी गए थे। वहाँ मैंने जो चित्र बनाया उसमें एक फ्लॉवर पॉट और डिजाइन बनाई। वहाँ बहुत से बच्चे चित्र बना रहे थे। बहुत से एक दिन पहले के थे। फिर वहाँ से उठे फिर खिलौने के स्टॉल पर गए। वहाँ आवाज़ करने वाला खिलौना बनाना सिखा रहे थे। पूछ-पूछकर मैंने भी बनाया परन्तु उसमें ठीक आवाज़ नहीं आई। हमने उनसे कहा तो उन लोगों ने कहा कि ठीक से नहीं बना होगा। फिर दो और बनाए। तो एक तो ठीक बना। उसमें ठीक आवाज़ आई। मैंने वह बच्चों को दे दिया। वहाँ खड़े आस-पास सारे ही बच्चे बाजा घुमाने में व्यस्त हो गए। क्योंकि बच्चों को खिलौने से अच्छी चीज क्या लगेगी।

फिर एक जगह कागज़ की चीजें बनाने को थी टोपी, डिब्बा वगैरह-वगैरह। मैं नुपूर छोटू को लेकर वहाँ गई। मैंने भी टोपी बनाई वहाँ जो भैया सिखा रहे थे उनसे पूछ-पूछकर। जब मेरी टोपी बन गई और छोटू पीछे रह गया तो वह भैया से हठ करने लगा, बताओ न भैया अब कैसे, अब कैसे? भैया के पास खूब सारे बच्चे वहाँ बैठे थे। बच्चों को बनाने में मुश्किल पड़ रही थी तो बच्चे कहीं यहाँ से, कहीं वहाँ से चिल्ला रहे थे भैया हमारा भैया हमारा। छोटू भी पीछे पड़ गया। उसने टोपी बनवाकर पहन ली और बहुत खुश हो गया।

वहाँ मिट्टी के खिलौने भी बच्चे बना रहे थे। मिट्टी को कूट -कूटकर उसके खिलौने बड़े मज़े से बना रहे थे। कुछ बच्चों ने बनाकर सूखने भी रखे थे, हम बस देखकर आ गए। विज्ञान के खेल देखे, वहाँ तराजू था जिसमें दोनों तरफ सौ ग्राम के बाँट रखे थे। फिर भी पलड़े ऊँचे-नीचे थे, क्योंकि उसकी बनावट में गड़बड़ी थी। उन लोगों ने बताया कि कई दुकानदार इस तरह से ही बेवकूफ बनाते हैं। और भी खेल देखे, मज़ा आ रहा था वहाँ पर।

वहाँ क्विज कांटेस्ट की तैयारी होने लगी। दरी बिछ रहीं थी। उतनी देर में पापा भी आ गए। हमने उन्हें गेट से ही देख लिया। परन्तु उन्होंने हमें नहीं देखा। इधर-उधर घूमने के बाद हम उन्हें दिख गए। थोड़ी देर बाद बच्चे दरी पर बैठना चालू हुए। मैंने नुपूर और छोटू से कहा, तुम भी बैठो जाकर। परन्तु वे नहीं गए। पापा ने कहा, तुम भी जाओ। मैंने कहा, इतने छोटे बच्चे हैं मैं कहाँ बैठूँ? पापा ने कहा, जाओ तो तुम, फिर नुपुर छोटू भी आ जाएँगे। मैं गई तो वो भी आ गए।

जो प्रश्न पूछ रहे थे उन्होंने कहा, सारे बच्चे यहाँ आ जाएँ। हम प्रश्न पूछेंगे तो आप हाथ खड़ा करेंगे। जिससे पूछेंगे वही जवाब देगा। हम उसे इनाम देंगे। मुझे लग रहा था कि बच्चे बोलने में डरेंगे परन्तु हुआ उल्टा। सवाल पूरा होता नहीं कि आगे के बच्चे खड़े हो जाते – सर हम बताएँगे, सर हम बताएँगे। पीछे के बच्चे रह जाते। प्रश्न पूछनेवाले ने पीछे देखा ही नहीं कि पीछेवाले बच्चे भी बोलने के लिए कितने उत्सुक थे। कहीं से किसी की आवाज़ आ रही थी, तो कहीं से किसी की, सर हम, सर हम। इसमें पूछनेवाला ही परेशान हो रहा था और लगातार कह रहा था, आप बैठ जाओ, आप बैठ जाओ। सवाल बहुत हैं पूछने के लिए। आराम से बैठिए। लेकिन बच्चे और ज़्यादा उचकने लगे थे। बार-बार खड़े हो जाते।

असल में उनकी व्यवस्था ठीक नहीं थी। पूरा घेरा बनाकर बीच में खड़े होना था ताकि कोई बच्चा उठता तो पता चल जाता। हाथ ऊँचे करता तो दिख जाता। इस प्रोग्राम के बाद कार्यक्रम खत्म हो गया। सब घर जाने लगे। पापा ने पहले दीदी को घर छोड़ा फिर हमें ले गए।

एकलव्य में जो दो दिन का कार्यक्रम था 'पिटारा उत्सव' उसे सिर्फ दो दिन का नहीं बल्कि पूरे महीने भर चलना था ताकि गर्मियों में बच्चे कुछ सीखते भी और मज़ा भी बहुत आता। बच्चों की रूचि से लग रहा था कि वह एक महीने तक आने को तैयार थे।

● टीना मिश्र, अरेरा कालोनी, भोपाल

लड़के एवं लड़कियाँ बराबर

मैं एक लड़का होते हुए भी यह कहता हूँ कि कभी-कभी लड़कों एवं लड़कियों में बराबरी का व्यवहार नहीं किया जाता है। उन्हें समान अधिकार नहीं दिए जाते हैं। जब घर में खाना बनता है, तो भाई और बहन दोनों अपनी-अपनी पसंद बताते हैं मगर माँ भाई की पसंद का खाना बनाती है। तो माँ बराबरी का व्यवहार नहीं कर रही है। ऐसी अनेक बातें हैं, जो हमारा ध्यान इस बात की ओर खींचती हैं कि हम लड़का और लड़कियों में बराबरी का व्यवहार नहीं करते हैं। कहीं-कहीं इसके विपरीत भी होता है।

लड़कों एवं लड़कियों के बीच बराबरी का व्यवहार किया जाना चाहिए। इस बात को सभी व्यवहार में नहीं लाते हैं, इसका कारण है लोगों के मन में उत्पन्न गलतफहमियाँ। मेरे घर में सभी के साथ बराबरी का व्यवहार किया जाता है। डाँट पड़ती है, तो सभी को एक जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन मेरे पड़ोस में कुछ लोग ऐसा नहीं सोचते हैं। वे लड़कों एवं लड़कियों को बराबर नहीं मानते हैं। वे समझते हैं कि लड़कियाँ पढ़कर करेंगी क्या? यही हमारे गाँव का भी हाल है। लगभग सभी जगह बराबरी का व्यवहार नहीं किया जाता है। मैं तो यह कहूँगा कि सभी से समान व्यवहार किया जाना चाहिए। लेकिन कुछ लोग ऐसे विषय पर बात तक करना पसन्द नहीं करते हैं।वे लड़कों को लड़कियों से बेहतर मानते हैं लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता हूँ।

● **राकेश गुप्ता, बालागुड़ा, मंदसौर, म.प्र.**

मैंने इस बार चकमक में पढ़ा तो उसमें एक सवाल अच्छा लगा कि लड़का लड़की के साथ बराबरी का व्यवहार किया जाए। जो कि हमारे यहाँ नहीं किया जाता। माता-पिता के पास पैसों की कमी के कारण लड़की बुरी लगती है। लड़के इसलिए अच्छे लगते हैं क्योंकि वो बड़े होकर माता-पिता की सेवा करेंगे। पिता चाहते हैं कि बेटी हो तो पैसा हो, क्योंकि दहेज पर से लड़कियाँ मारी जाती हैं तो माता-पिता को बहुत दुख होता है। इसी बात पर चार लाइनों में कहती हूँ कि –

हाथ पीले तुम्हारे करके
मैंने गंगा नहा लिया है
तुमको घर से विदा किया है
तुमको घर से विदा किया है।

जब बेटी को सुसराल में जला दिया जाता है। तब बेटी की आत्मा अपने पिता के पास आकर कहती है –

दोनों ने अपना-अपना फर्ज निभा लिया है
तुमने घर से विदा किया है
उसने जग से विदा किया है।

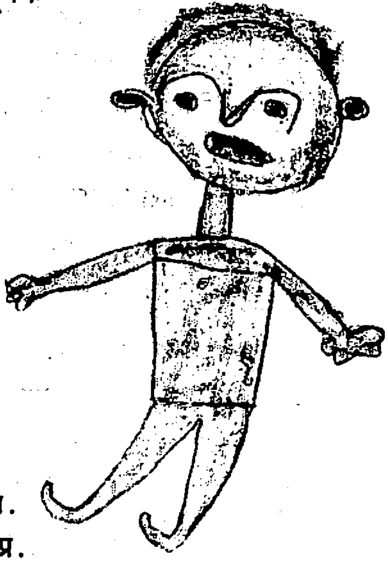

● **नाम नहीं लिखा, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.**

● **चित्र : संतोष कुमार, छठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म.प्र.**

वर्ग पहेली - 107

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. भलाई करने वाला, चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने वाली एक कम्पनी (4)
3. सुबह और शाम के बीच का समय (4)
5. ईश्वर को भी कह सकते हैं या शुभचिंतक भी (3)
6. अलग न कर में विवाह मुहूर्त है (3)
8. सीधी-सादी नार में ढूँढो सोने के सिक्के (3)
9. नमाज़ के वक्त मौलवी द्वारा दी जाने वाली पुकार (3)
10. एक खास प्रकार की घास (2)
11. कानून की धारा का दूसरा नाम (2)
13. जिस मुँह में दाँत न हो (3)
15. यह ताश के पत्तों में, उम्मीद का अन्त है (3)
16. रेखा (3)
17. गाय अपने बछड़े को जिस क्रिया से साफ करती है उसका नाम (3)
19. हरा शहद की काट-छाँट में विजयादशमी (4)
20. हाल ही में भारत व पाकिस्तान की सीमा पर हुआ दुखद युद्ध इसी नाम से जाना जाता है (4)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. दुनिया की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला (4)
2. 20 दस्ता कागज़ = एक .... (2)
3. दो लाइनों में बनने वाली छन्द या कविता (2)

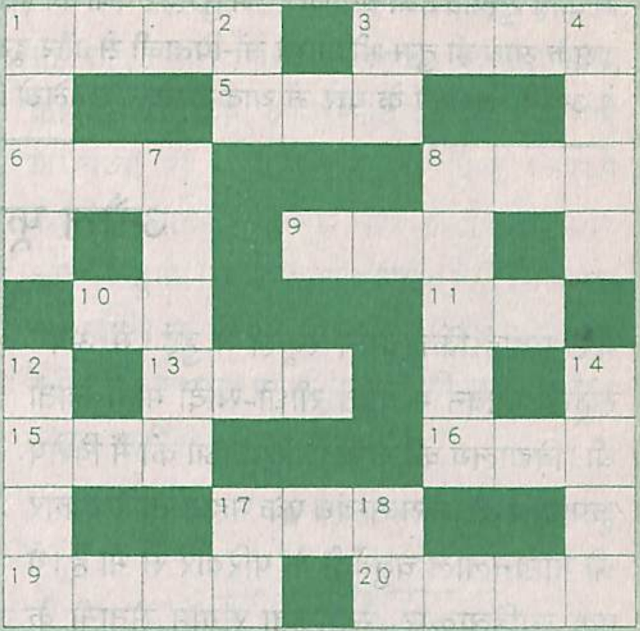

4. कतरा-कतरा या हर बारीकी (2,2)
7. वह व्यक्ति जिसने चेहरा ढँका हुआ हो (5)
8. नल की दया में ढूँढो दीन-दुखियों का मददगार (5)
12. शेर के गरजने की आवाज़ (4)
14. अकबर के दरबार का एक प्रसिद्ध चतुर व्यक्ति (4)
17. मछली पकड़ने के लिए इसे वंशी में फँसाते हैं (2)
18. रास्ते में वह जगह जहाँ समान की जाँच की जाए या टैक्स वसूला जाए (2)

मायाराम सोनकर, रूदगाँव, राजनांदगाँव, म.प्र.
द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित

वर्ग पहेली - 107 का हल चकमक के अगस्त, 2000 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का अगस्त, 2000 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

हमारे शिक्षक : 20

इस शृंखला में अब तक तुम कई लोगों के स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें पढ़ चुके हो। तुम्हें यह शृंखला कैसी लग रही है? क्या तुम इसके बारे में कोई सुझाव देना चाहोगे? हम तुम्हारे पत्रों का इंतज़ार कर रहे हैं। और हाँ, इसके साथ ही तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे में याद करके कुछ लिखें।

अप्रैल फूल बनाया

मेरी पढ़ाई क्रिश्चियन स्कूल में हुई। मैं अपने स्कूली जीवन में बहुत सीधी-सादी मानी जाती थी। विद्यालय की सभी शिक्षिकाओं की मैं विशेष कृपापात्र थी। मेरा सम्बंध एक महान साहित्यकार श्री माखनलाल चतुर्वेदी के परिवार से भी है। वे एक साहित्यकार, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के साथ-साथ बचपन से ही बहुत ही अधिक शैतान थे। वे घर के सभी बच्चों को अपनी शैतानियों के किस्से सुनाया करते थे। हमें बहुत मज़ा आता था। जाहिर है कि हम भी उनके जैसी ही कुछ शैतानी करने को उत्साहित होते।

दादाजी (माखनलालजी) किसी को भी अप्रैल फूल बनाने में माहिर थे। उन्हीं से प्रेरणा प्राप्त कर मैंने भी स्कूल में ऐसा ही कुछ करने का सोचा। मैंने अपनी योजना अपनी सबसे घनिष्ठ एवं विश्वसनीय मित्र को बताई। मैंने उसे कसम दी कि कुछ भी हो जाए तू किसी को भी इस योजना की जानकारी नहीं देना।

अगल दिन 1 अप्रैल थी। मैंने स्कूल में पहुँचकर स्वयं को अनमना एवं अस्वस्थ-सा प्रदर्शित किया। कुछ ही देर बाद मैं बेहोश हो गई। विद्यालय की समस्त शिक्षिकाएँ घबरा गईं और फिर शुरू हुई मेरी तीमारदारी। किसी ने मेरे चेहरे पर पानी डाला तो किसी ने कापी से मुझ पर हवा की, और कुछ देर तक मेरे होश में आने का इंतज़ार करने लगे। पर मुझे होश नहीं आया।

फिर तो मुझे होश में लाने का प्रयास युद्धस्तर पर किया जाने लगा। गन्दे बदबूदार जूतों की दुर्गन्ध को भी मेरी नाक को सहना पड़ा। इसके बाद भी जब सफलता नहीं मिली तो प्याज का रस मेरी नाक में डाला। कंडे की धूनी दी। किन्तु सफलता नहीं मिलने पर हॉस्पिटल से एम्बुलेंस डॉक्टर एवं नर्स को भी बुलवाया गया। हमारी परिचित डॉक्टर ही स्कूल आईं थीं। उन्होंने मुझे हॉस्पिटल ले जाने के लिए कहा। मुझे स्ट्रेचर पर लिटाकर ले जाने लगे। डॉक्टर ने कहा मैं हॉस्पिटल से ही दादा को फोन कर दूँगी।

ज्योंही मैंने सुना की दादाजी को फोन किया जाएगा तो डाँट पड़ने के डर से मैं उठ बैठी। मुझे अचानक स्वस्थ होते देख सभी को आश्चर्य हुआ, मैंने घबराकर कहा, 'घर फोन मत करना दादाजी डाँटेंगे।'

मेरी कक्षा शिक्षिका ने समझाकर कहा – 'नहीं बेटा, डरने की कोई बात नहीं है। तुम्हारी तबियत खराब हो गई है। इसे तो बताना ही होगा।'

मैंने डरते-डरते कहा, 'मेरी तबियत खराब नहीं हुई थी। मैंने तो अप्रैल फूल बनाया था।' मेरा इतना कहना था कि सभी मुझसे नाराज होने लगे। सारी शिक्षिकाएँ एवं डॉक्टर भी। किंतु मेरी कक्षा शिक्षिका मेरे सिर को सहलाती हुई मुस्कुराती रही। सब लोगों ने जब जी भरकर मुझे डाँट लिया। तब उन्होंने कहा, 'बड़ी बहादुर और सहनशील हो तुम। प्याज के रस और धूनी को भी तुमने सहन कर लिया।' डॉक्टर भी बहुत नाराज़ थीं। वे मुझे घर ले गईं। मुझे घबराया देख मेरी शिक्षिका भी साथ में गईं।

घर पर जब दादाजी से मेरी शिकायत की गई तो उन्होंने जोरदार ठहाका लगाया और कहा – 'ऐसे काम की उम्मीद यदि मेरे परिवार के बच्चों से नहीं करोगे तो फिर किससे करोगे?' दादाजी ने मुझे नहीं डाँटा। मुझे घोर आश्चर्य हुआ। जान में जान आई। मेरी शिक्षिका ने दादाजी के सामने भी मेरी तारीफ की। मुझे मेरी शिक्षिका उस समय दुनिया की सबसे महान इंसान लगीं।

● श्रीमती सरोज चतुर्वेदी, हरदा

● चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

एकलव्य के नए प्रकाशन

एक चित्रकथा

भालू ने खेली फुटबॉल

पृष्ठ : 16+4; मूल्य : 10 रुपए

बच्चों के लिए कविताएँ

नई सवारी

पृष्ठ : 12+4; मूल्य : 2 रुपए

जीव एक मतवाला
माथ सींग का जाला
हर पर छै शाखाएँ
साल गिरें, उग आएँ

बूझो-बूझो से

पहेलियों की किताब

बूझो-बूझो

पृष्ठ : 24+4; मूल्य : 5 रुपए

किताब मँगाने के लिए किताब की कीमत और साथ में रजिस्टर्ड डाक का खर्च 15 रुपए जोड़कर मनीऑर्डर से भेजें।

मनीऑर्डर भेजने के लिए पता

एकलव्य
ई–1/25 अरेरा कॉलोनी,
भोपाल, 462016 म. प्र.

रद्दी सामान

♦ गिरिजा कुलश्रेष्ठ

वरुण भैया ने आँगन में बिखरे सामान को इस तरह देखा जिस तरह कोई किसी मरे हुए जानवर को देखता है। और उससे उतनी ही जल्दी छुटकारा पाने की आतुरता भी दिखाते हुए उन्होंने अपना आदेश, जैसा कि वो हमेशा ही करते हैं, मेरी तरफ गुलेल की गोली की तरह फेंका–

"राजन! जा जल्दी से किसी रद्दीवाले को पकड़ ला और इस सामान को रफा-दफा करवा....। आजकल रद्दीवाले तो गली मोहल्ले में ऐसे घूम रहे हैं जैसे बरसात में मेंढक और केंचुए....।"

इतना कहते-कहते उन्होंने अपनी लम्बी नाक ऊपर खींचकर छोटी करते हुए होंठों को कुछ इस तरह सिकोड़ा कि नाक के दोनों तरफ नालियाँ सी बन गईं। ऐसी जटिल मुद्रा वे अक्सर किसी के प्रति गहरी उपेक्षा दिखाने के लिए करते हैं। पर उस समय उनकी उपेक्षा रद्दी सामान के प्रति थी या रद्दी खरीदने वालों के प्रति, कहना मुश्किल था। लेकिन मुझे खुशी थी कि हम सारे रद्दी सामान को अलविदा कहने वाले थे जिसकी मौजूदगी के कारण हम कभी नयापन महसूस नहीं कर पाए। हर साल दीपावली पर घर की सफाई होती लेकिन पुराना सामान धूल झाड़, साफ कर वहीं का वहीं जमा दिया जाता था। कम से कम दीपावली पर तो घर को नएपन के साथ जगमगाना चाहिए।

हमारे पिताजी को चीजों के संग्रह में विशेष रुचि है। घर में कोई भी चीज उनसे पूछे बगैर बाहर नहीं जा सकती। यहाँ तक कि फटे जूते चप्पलें भी हफ्तों महीनों आँगन में इधर से उधर सरकाए जाते रहते हैं, पर कचरे में नहीं फेंके जाते। बाद में वे

किसी कोने में या टाँड पर सरका दिए जाते हैं। यही बात हर चीज के बारे में लागू होती है।

''किसी जरूरतमन्द को दे देंगे'' पिताजी का इस संग्रह के पीछे यही तर्क रहता है अक्सर।

''लेकिन पिताजी, जो चीज हमारे काम की नहीं उसे दूसरों को देना..... क्या ठीक होगा।'' भैया कभी-कभी पूछ बैठते।

पिताजी ऐसे सवालों पर एक ही बात कहते हैं, ''आजकल के बच्चों को देखो......... कितने मुँहजोर हैं।''

एक बार चाचाजी ने पिताजी से पुरानी चीजों के विषय में ही कह दिया था कि ये पुरानी चीजें अब किसी काम की नहीं हैं निकाल देना चाहिए।

''लो सुन लो माँ इनकी बात'' पिताजी ने दादी को उकसाते हुए कहा।

''पुरानी चीजें इनके लिए बेकार हैं... कल को माँ और फिर हम लोग भी पुराने और बेकार होने वाले हैं।''

''भाई साहब! मैं तो घर की फालतू और बेजान चीजों के बारे में कह रहा था।'' चाचाजी ने कुछ शर्मिन्दा होकर कहा।

''क्यों इन फालतू और बेजान चीजों से कभी तुमने काम नहीं लिया था।'' पिताजी एक काबिल वकील की तरह अपने प्रतिपक्षी को पछाड़ने के लिए ढेरों दलीलें पास रखते हैं हर वक्त।

''तुम इन्हें आज फालतू कह रहे हो पर क्या हमेशा से ही ये चीजें फालतू थीं? इन टूटी चप्पलों को ही लो। जब तुमने खरीदी थीं, नई थीं। थीं न?''

''थीं।'' चाचाजी ने कठघरे में खड़े मुजरिम की तरह स्वीकार किया।

''और इनकी यह हालत तुम्हारे पहनने के कारण हुई। हुई न?''

''हुई।''

''बस! यही बात मैं तुम्हें समझाना चाह रहा था। किसी चीज से हम काम कर लें और काम की न रहने पर उसे फालतू करार दे दें....क्या यही इन्सानियत है?''

''ओफ...ओ भैया...'' चाचाजी ने अधीर होकर कुछ कहना चाहा। पर पिताजी ऐसे मौकों पर किसी को बोलने देते हैं? तुरन्त बात काटकर अपनी बात कहते रहे, ''सवाल जानदार या बेजान चीजों का नहीं, हमारी सोच का है... आज जो सोच बेजान चीजों के लिए है वही कल इन्सानों के लिए भी हो जाएगी।... क्या मैं गलत कह रहा हूँ?''

पिताजी अपनी हर बात के पीछे यह सवाल जरूर फिट करते हैं। जाहिर है कि इसका जबाब हर एक को 'नहीं' में देना पड़ता है। चाहे उनके तर्क कितने ही बेतुके या कड़वी गोली की तरह

निगलने में तकलीफदेह हों, सब निगलते हैं चुपचाप।

इधर दीपावली का त्यौहार फिर से दरवाजों पर दस्तक देने लगा था। घरों में सफाई, पुताई, धुलाई और रंगाई जैसे कार्य युद्ध स्तर पर छेड़े जा चुके थे पर हमारे सामने फिर वही सवाल था – 'आखिर इस रद्दी सामान को कब और कैसे ठिकाने लगाया जाए?' हालाँकि दादी के गुजरने के बाद ही हमारे दिमाग में यह विचार सुगबुगाने लगा था। पर हम इतना ही जानते थे कि पिताजी की मौजूदगी में भी यह काम उतना ही मुश्किल है। वो कहीं जाते-आते भी नहीं। जाते भी हैं तो शाम को वापस। इतने सारे सामान को निकालना कोई घंटे दो घंटे का काम तो था नहीं। क्या करें... कैसे करें... यही सोचकर हम हैरान थे।

संयोगवश पिताजी को तीन-चार दिन के लिए बुआ के यहाँ जाना पड़ गया। माँ ने जाते-जाते चुपचाप वरुण भैया को समझाया, ''इस बार रद्दी सामान को ज़रूर निकाल देना वरुण! तुम तो जानते हो कि तुम्हारे पिताजी सामने ही बखेड़ा करते हैं पीछे कुछ नहीं। और थोड़े बहुत नाराज होंगे भी तो समझा लेंगे... आखिर रद्दी सामान को कहाँ तक सहेजकर रखेंगे?''

माँ ने भैया को जब यह विशेषाधिकार दिया तब भैया तो खुश थे ही पर उनसे भी ज्यादा खुश मैं था। पूरे उत्साह के साथ सामान निकलवाने और छँटवाने में लगा रहा। दो दिन की मेहनत मशक्कत के बाद आँगन में पुरानी चीजों का ढेर लग गया। लोहे लकड़ी के पुराने टूटे संदूक, पेटियाँ, टूटी कुर्सियाँ, दो-तीन बैग, लालटेन, चरखा, खिलौने, ढेरों कपड़े, दादा-परदादा के बर्तन, डिब्बे-डिब्बियाँ, बोतल-शीशियाँ, किताबें, पत्रिकाएँ और भी तमाम छोटा-मोटा सामान।

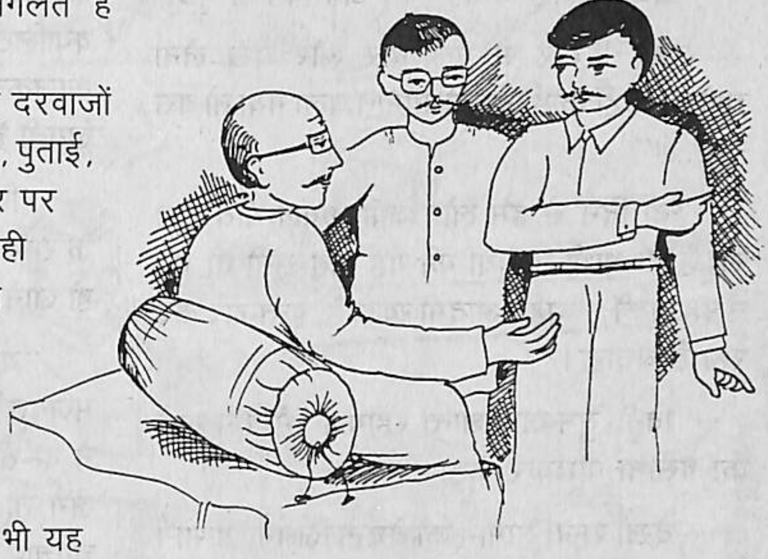

''लोहा, प्लास्टिक वा..ला, टीन-टप्पर वा...ला, कॉपी...अखबार वा.. ऽऽ..ला।''

अचानक मेरा ध्यान भंग हुआ, तो मैंने देखा गली में चार पहियों के ठेले को धकेलता हुआ एक आदमी आँखें बन्दकर आसमान की तरफ पूरा मुँह खोलकर चिल्ला रहा था।

''ओ रद्दीवाले भैया! रद्दी सामान खरीदोगे?'' मैंने उसे पुकारा तो उसने आँखें खोलकर मेरी ओर देखा और चुपचाप मेरे पीछे आ गया।

''भैया!....भैया मैं उसे ले आया। बाहर खड़ा है।'' मैंने उल्लास से चहकते हुए भैया को बताया। मेरा विचार था कि अब भैया मान जाएँगे, कि मैं भी कुछ काम का हूँ। पर भैया ने मेरी बात जैसे सुनी ही नहीं।

''भैया!....चलो न'' मुझे पिताजी के लौटने का खटका बराबर लगा था इसलिए मैंने भैया को जल्दी करने को उकसाया।, पर वे कुछ खीजकर बोले, ''रुक जा, यार''

सात साल बड़े वरुण भैया जब मुझे इस तरह के दोस्ताना सम्बोधन के साथ पुकारते हैं तब मैं समझ जाता हूँ कि किसी असमंजस में हैं और उन्हें मेरी मदद की जरूरत है।

"क्या बात है भैया!" मैंने अपनेपन से पूछा।

"मेरे विचार से एक बार और देख लेना चाहिए। कहीं कोई जरूरी सामान चला गया तो बस गया...।"

"दो दिन से हम लोग क्या केवल गीत गाते रहे हैं?" भाभी ने भैया की यह बात सुनी तो चुप न रह सकीं, "बाहर आदमी खड़ा है, इन्तजार कर रहा है बेचारा।"

"विनी! तुम जरा शान्त रहोगी।" भैया ने माथे का पसीना पोंछकर कहा।

"देखो राज! सामान को बेचना जितना आसान है खरीदना उतना ही मुश्किल... तुम लोग अभी नहीं समझते कि जिन्दगी कैसे चलाई जाती है।"

"जिन्दगी चलने का इस रद्दी सामान से क्या ताल्लुक?" भैया के इन शब्दों पर मेरी हँसी फूटते-फूटते रह गई। लेकिन जब मैंने देखा कि भैया का सारा जोश (सामान निकालने का) उसी तरह धीमा पड़ गया है जिस तरह सड़क पर बने गतिरोधकों (स्पीडब्रेकर) के कारण गाड़ी की गति धीमी हो जाती है। तब मैं शान्त हो गया।

मैंने भैया की बातों में एक खास बात भी देखी कि न तो ये वाक्य भैया के थे न ही बोलने का लहजा।

कई बार ऐसा होता है कि हमारे मुँह से कोई और बोलता है और हमें इसका पता ही नहीं चलता। भैया के मुँह से उस समय सरासर पिताजी बोल रहे थे। मैं हैरान। शरीर से यहाँ न होने पर भी पिताजी हमारे पास बखूबी मौजूद थे। भैया की जुबान में, उनके विचारों में। और यकीनन इसमें भैया का तो कोई दोष ही नहीं था। और ऐसे में जरुरी था कि हम उनकी बात समझते।

"पुरानी चीजों की आज भी बड़ी अहमियत है राज। इस लकड़ी के सन्दूक को देखो। दादाजी के दादाजी ने मात्र तीन रुपए में खरीदा था। पर क्वालिटी देखो, आज भी कितना मजबूत है। आजकल हजारों की चीज छह महीने में ही खुलने लगती है।"

"फिर इसे रहने देते हैं।" मैंने बड़ी उदारता के साथ कहा हालाँकि अच्छे भले गुब्बारे में सुराख हो जाने जैसी दशा होने लगी थी मेरी। लेकिन....।

"यह लोहे का बाक्स जंग खा रहा है पर मजबूत वैसा का वैसा ही है देखो" यह कह भैया ने दो-तीन मुक्के मारकर दिखाए। "पेन्ट करवा लेंगे तो नए को मात देगा... है कि नहीं?" मैंने चुपचाप लोहे का बाक्स भी एक तरफ सरका दिया।

"और विनी!" भैया ने भाभी को खुश करने के अन्दाज में कहा, "यह छोटा सन्दूक याद है तुम्हें? तुम्हारी दादी ने जन्मदिन पर भिजवाया था। लिखा कि बचपन में विनीता, इसमें अपने खिलौने और गुड्डे-गुड़िया रखा करती थी।"

भाभी बिना किसी रुकावट के मुस्कुराईं और छोटी बच्ची की तरह मचलकर भैया के हाथ से वह सन्दूक छीन लिया।

"ये लकड़ी की पेटियाँ भी उठाकर रख दो राज!" भैया अब खुलकर आदेश देने लगे। "क्या है कि इनसे अनेक काम लिए जा सकते हैं। चाहो तो सामान भरकर रख दो, चाहे तो लिखने के लिए मेज बना लो। और कुछ नहीं तो मिट्टी भरकर गमलों का काम ही ले लो....। यह लालटेन! क्या हुआ जो बिजली के युग में इसे कोई नहीं पूछता पर बिजली के जाने पर तो आज भी यही काम देती है...मैं तो....."

"भैया! इसे भी रख लेते हैं।" मैं घबराकर बोला। भैया कहीं बात को 'च्यूइंग गम' न बना डालें। फिर तो जादुई ढंग से सामान छँटने लगा। सबके पीछे दमदार दलीलें। कुर्सियों की जरा-सी मरम्मत

करके नई खरीदने की फिजूल खर्ची से बचा जा सकता है। चरखा व चक्की माँ के अपने जमाने की यादगार हैं इन्हें मिटाना ठीक नहीं। बैग में केवल चेन लगानी है। पीतल के बर्तनों में जरा सा टाँका लगना है नए हो जाएँगे। यह सिंगारदान भाभी के विवाह की निशानी है तो ये खिलौने व झूला भैया के बचपन की यादें। किताबें तो सभी पढ़ने लायक हैं, तो पत्रिकाओं में बुनाई व्यंजनों के बढ़िया नमूने हैं।

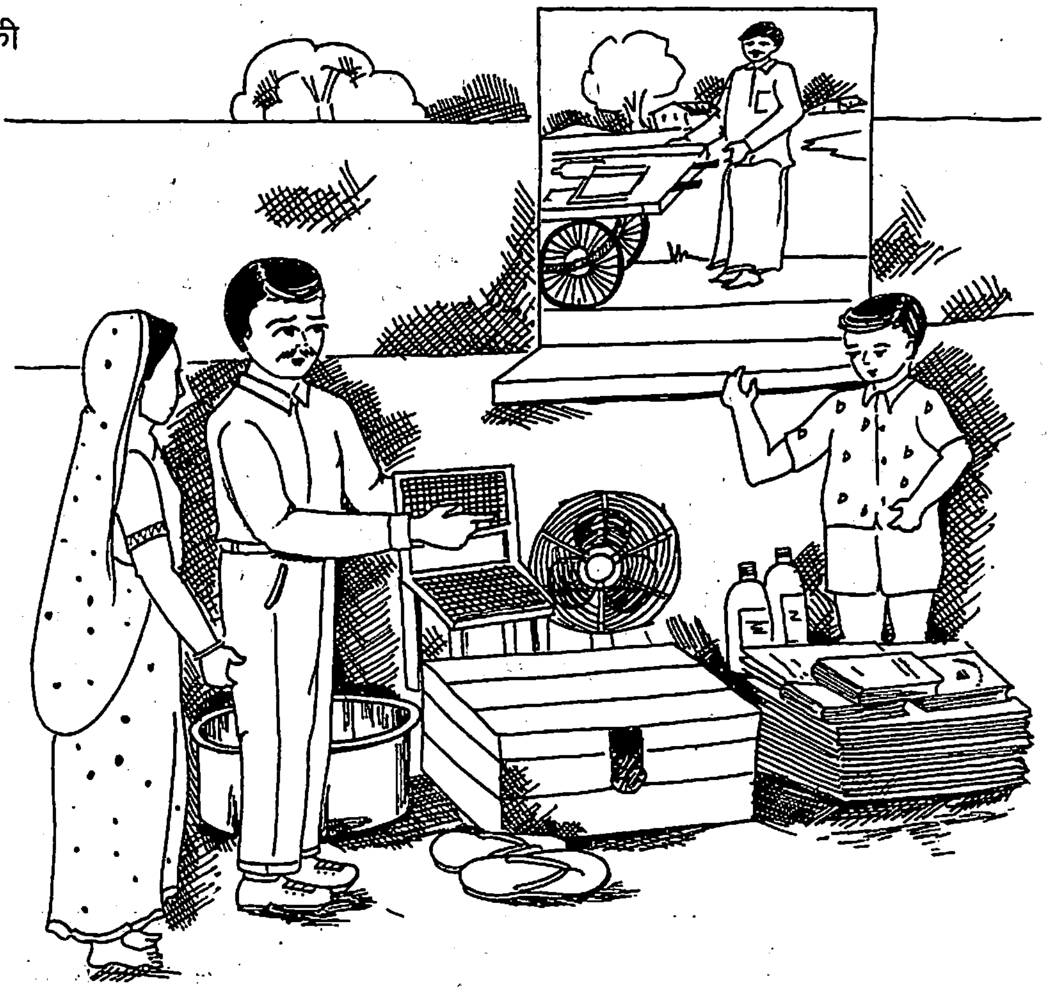

अखबारों को गलाकर माँ बढ़िया टोकरियाँ व मूर्तियाँ बना लेंगी.... तो पॉलीथिन से भाभी दरी और आसन। इन जूतों में जरा-सी सिलाई होनी है, तो वे चप्पलें मरम्मत करके बरसात में काम देंगी।

सारा नाटक वही पुराना था। कहानी, संवाद सब कुछ वही पुराना। बस पात्र नए थे। चूँकि मुझे अभी तक इस नाटक में अपनी भूमिका व संवाद समझ में नहीं आए थे इसलिए मैं हैरान सा चुपचाप खड़ा था। तभी भाभी ने मुझे पुकारा, "राज! तुम्हारे ये पैंट-शर्ट छोटे जरूर हो गए हैं पर इन्हें होली पर पहनना खूब मजेदार रहेगा। छोटी सी तंग शर्ट बिल्कुल चार्ली चैपलिन जैसी और ऊँचा पैंट 'आवारा' जैसा। दादाजी की छड़ी और पिताजी वाला हैट। आएगा न मजा?"

भाभी की बात सुनकर मुझे लगा कि मुझे भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी पड़ेगी और वह यह कि दरवाजे पर खड़े बेचारे रद्दी वाले को लगभग एक घंटा हो चला था। बीच में पाँच दस बार वह हमें जल्दी करने के लिए पुकार चुका था। उसे किसी तरह सन्तुष्ट करके चलता करना था। इसलिए मैंने इधर उधर से कुछ टूटे पिचके डिब्बे-डिब्बियाँ बटोरे, कुछ खाली शीशियाँ उठाईं जिनके ढक्कन गायब थे, कुछ चप्पल समेटी जिनमें मरम्मत की कहीं कोई गुंजाइश न थी। और कुछ यहाँ वहाँ बिखरे कागज, कीलें, लेकर उसे देने चल पड़ा। अब वह सन्तुष्ट हुआ या झल्लाया यह तो सवाल ही बेकार है क्योंकि इससे ज्यादा उसे देने के लिए हमारे पास रद्दी सामान था ही कहाँ?

सभी चित्र : सुशील लांडगे

माथापच्ची

(1)

__मानसी__ ने साठ रुपए में एक खिलौना खरीदा। कुछ दिन बाद उसने इसे अपनी सहेली रानू को सत्तर रुपए में बेच दिया। खिलौना बेचने के बाद उसे बहुत बुरा लगा। इसलिए उसने फिर से उसे अस्सी रुपए में रानू से खरीद लिया। आखिर में उसे लगा कि क्यों न इस पुराने खिलौने को बेचकर नया खिलौना लिया जाए। उसने इस बार आशी को नब्बे रुपए में वह खिलौना बेचा। जरा हिसाब तो लगाओं कि इस खरीद-फरोख्त में मानसी को कितना नफा-नुकसान हुआ।

(2)

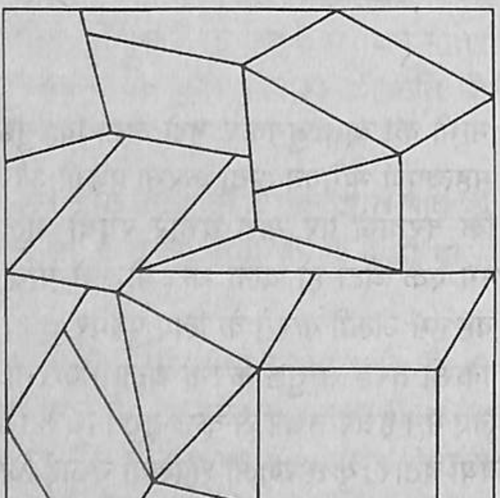

कभी-कभी आकृतियों की गुत्थी सुलझाना आसान नहीं होता है। जैसे इस चित्र को ही लो। इस चित्र में कितने ही त्रिभुज और चतुर्भुज होंगे। अब देखें तुम कितने त्रिभुज और चतुर्भुज ढूँढ पाते हो।

(3)

इस माथापच्ची का हल एक ऐसी संख्या है, जिसे तुम 2 से भाग दो, चाहे तीन से या फिर 4, 5 या 6 से 1 तो बाकी बचेगा ही। हाँ लेकिन यह ग्यारह से यह पूरी तरह कट जाती है।

(4)

चलो दस सिक्के जुगाड़ो और हल करो एक और आसान सी माथापच्ची। इन दस सिक्कों को पाँच सीधी रेखाओं में इस तरह जमाओ कि एक सीधी रेखा में कम से कम 4 सिक्के रहें।

(5)

यह है सोलह खानों का एक बॉक्स। इसके चार खानों में एक से चार तक के अंक भरे हैं। इन्हीं चार अंकों से बाकी के बारह खाने भी भरना है। सवाल सिर्फ इतना ही नहीं है। इससे एक शर्त भी जुड़ी है कि दाएँ से बाएँ और ऊपर से नीचे की ओर सीधी लाइन में कोई भी अंक दुबारा न आए।

	1		
			2
		3	
4			

(6)

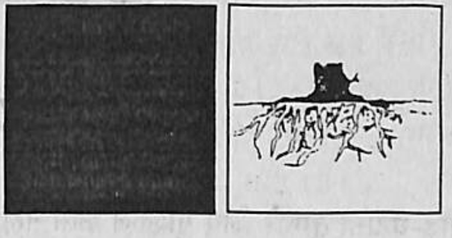

यहाँ दो चित्र नज़र आ रहे हैं। इन दोनों के नामों को अगर मिला दिया जाए तो गणित की एक विशेष क्रिया का नाम बन जाता है। चलो एक संकेत और देते हैं 9,81 का ....?

(7)

400 मीटर लम्बी एक रेलगाड़ी एक 200 मीटर लम्बे प्लेटफॉर्म को 2 मिनट में पार कर लेती है। प्लेटफॉर्म पर खड़ा एक व्यक्ति सोच रहा है कि अगर रेलगाड़ी इसी गति से चले तो उसे कितने समय में पार कर लेगी? तुम बताओ।

(8)

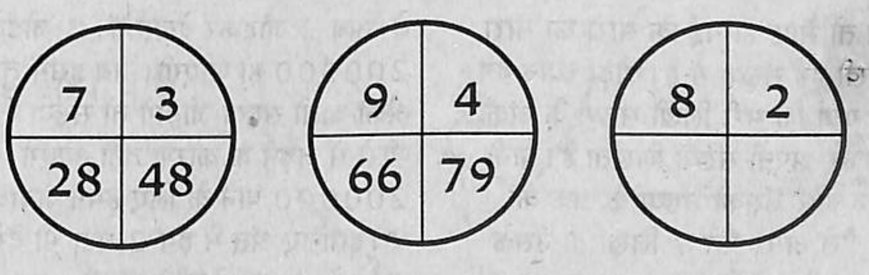

यहाँ तीन गोले दिए हैं। इनमें से दो में कुछ अंक भरे हैं। एक गोले का आधा भाग खाली है। इन गोलों में अंक एक खास रिश्ते के आधार पर भरे गए हैं। थोड़ा सा गुणा–भाग करके तुम इस रिश्ते का पता लगा सकते हो। इसके बाद आधे खाली गोले में अंक भरना कोई मुश्किल काम नहीं होगा। है न।

चुटकी में जोड़ो

''वैसे जोड़-घटाना तुम्हारे लिए मुश्किल काम नहीं होगा।'' यह मेरा दोस्त था जो हमेशा गणित के मज़ेदार खेल बताता। मैं समझ चुका था कि इस बार वह मुझे कोई जोड़ घटाने का सवाल बताने वाला है। ''चलो कोई भी पाँच अंकों वाली संख्या लिख लो।'' उसने कहा।

मैंने लिखी – 57291 फिर उसने इसके नीचे एक और संख्या लिख दी – 42708 इस तरह एक बार मैं लिखता और एक बार वह लिखता।

57291
42708
32517 मेरी संख्या
67482 उसकी संख्या
31426 मैंने लिखा
231424

उसने मेरे लिखते ही हल यानी इन पाँचों संख्याओं का जोड़ लिख दिया। वह भी बाँईं तरफ से। मैंने कहा कि क्या वह तब भी इतनी ही जल्दी जोड़ सकता है जबकि पाँचों संख्याएँ मैं ही लिखूँ। वह इस बात को टाल गया।

इससे ये बात तो साफ हो गई कि सारा का सारा मामला उसकी लिखी हुई संख्या में है। थोड़ा ध्यान देने पर मुझे पता चल गया कि मेरी लिखी संख्या के अंकों को वह 9 से घटाकर अपनी संख्या लिखता है। यानी मेरी संख्या के अंक और उसकी संख्या के अंक का जोड़ 9 हो जाए। जैसे अगर मैंने 7 लिखा तो उसके नीचे वह 2 लिखेगा। मैंने 4 लिखा तो वह 5 लिखेगा।

फिर आखिरी संख्या और उत्तर पर मेरा ध्यान गया तो देखा कि आखिरी संख्या के दो अंकों को छोड़कर बाकी अंक उत्तर में जस के तस हैं। आखिरी संख्या के आखिरी अंक में 2 घटाया गया है। और उसमें बाँई ओर 2 रख दिया गया है।

थोड़ी देर बाद मैंने कहा, '' चलो अब तुम संख्या सोचो, हम बताते हैं।'' गल्ती से मैं पाँच की जगह सात संख्याएँ लिख बैठा। मेरा दोस्त इससे खुश हो गया। कहने लगा, ''चलो लिखो उत्तर।'' मैंने तुक्का मारा और आखिरी संख्या के आगे बाँई ओर 2 की जगह 3 रखा। तीन ही आखिरी अंक से घटाया। जब जोड़कर देखा तो हल बिल्कुल सही था। तुक्के को परखने के लिए मैंने तीन–चार बार और इस तरह के सवाल किए।

क्यातुम इसका राज़ जानना चाहोगे ? यह जानने के लिए मैंने आखिरी संख्या को छोड़कर बाकी की 4 संख्याएँ जोड़ीं। जैसे पहला ही सवाल ले लें। तो पहली चार संख्याओं का जोड़।

57291
42708
32517
67482
199998

हम आखिरी संख्या के आखिरी अंक से 2 घटाते थे। अब 2 जोड़कर देखते हैं। 2 जोड़ने पर यह संख्या 200000 हो जाएगी। अब इसमें तुम कोई भी पाँच अंकों वाली संख्या जोड़ोगे तो संख्या के सभी अंक ज़ीरो से जुड़ने के कारण वही आएँगे। लेकिन 200000 पाने के लिए हमने जवाब में 2 जोड़ा था। इसलिए अंत में हम 2 घटा भी देंगे। अब तुम्हें बाईं ओर दो रखने की बात भी समझ में आ गई होगी।

ज़रा 7–7 और 9–9 संख्याएँ लेकर देखो। क्या ज्यादा अंकों वाली संख्याओं को भी इसी तरीके से जोड़ सकते हैं। जोड़-घटाने के उस्ताद बनने के बाद तुम भी अपने दोस्त के घर जाकर बोल सकते हो ''वैसे जोड़ घटाना तो तुम्हारे...!''

मेरा पन्ना

मैना रानी की सच्ची कहानी

एक दिन की बात है। मैं अपने आँगन में खेल रहा था। अचानक जाम के पेड़ से एक मैना गिर पड़ी। मैंने देखा तो वह खून से लथपथ थी। जब मैं उसके पास गया तो वह घबरा गई और उड़ने की कोशिश करने लगी। लेकिन उससे उड़ा नहीं गया। मैंने उसे धीरे से उठाया और देखा तो उसके पंख के नीचे गहरा ज़ख्म था और पैर भी मुड़ा हुआ था। उससे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था। पेड़ पर कौए भी बैठे थे। शायद किसी कौए ने उसे घायल कर दिया था। मैंने उसका खून साफ किया और मेरे बड़े भाई अफ़ज़ल और अकरम की मदद से घर में रखा हुआ ज़ख्म का मलहम उसे लगाया। पैर को सीधा कर हल्दी लगाई और पट्टी बाँध दी। बाद मैं उसे मैंने पानी पिलाया और अनाज के दाने खिलाए। फिर उसे एक जालीदार सब्ज़ी की टोकरी में बन्द कर दिया।

दूसरे दिन सुबह मैंने उसे चावल के दाने खिलाए। पानी पिलाया और स्कूल चला गया। स्कूल से आने के बाद मैंने उसके ज़ख्म को खुला छोड़ दिया। परन्तु वह एक ही जगह बैठी रही। हमने उसका नाम मैना रानी रख दिया। हमने चार दिन तक इसी तरह उसकी देखभाल की। तीसरे दिन वह धीरे-धीरे चलने भी लगी और उड़ने की भी कोशिश करने लगी थी। लेकिन वह उड़ नहीं सकती थी। अब मैना रानी हमसे डरती भी नहीं थी। वह चलकर हमारे पास भी आ जाती थी। अब उसका जख्म भर गया था। पैर भी कुछ हद तक ठीक हो गया था।

पाँचवें दिन दोपहर में हमने उसे आँगन में खुला छोड़ दिया। मैना रानी उड़ने की कोशिश करने लगी। वह अचानक झटके से उड़ी और पेड़ पर जा बैठी। हम उसे देखते रहे। कुछ देर बाद वह उड़कर आँगन के बाहर वाले पेड़ पर जा बैठी। हमने सोचा अब वह नहीं आएगी। लेकिन वह दूसरे दिन दोपहर में आँगन में आकर बैठ गई। मैंने रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े उसके सामने डाल दिए। वह जल्दी-जल्दी खाने लगी। मैंने उसे पकड़ना चाहा तो वह उड़कर जाम के पेड़ पर जा बैठी।

मेरी मम्मी अनाज काटती है। उस समय वह आकर अनाज के दाने चुगने लगती है। मैं भी उसे रोज़ कुछ न कुछ खिलाता रहता हूँ और पानी का कटोरा भरकर पेड़ के पास रख देता हूँ। जब भी उसे प्यास लगती है तो कटोरे में रखा पानी पी लेती है। हम सभी उसे मैना रानी कहकर बुलाते हैं।

➡ अज़हर खाँ तड़वी, तीसरी, बुरहानपुर, म.प्र.

नाव चली

नाव चली भई नाव चली
लहर-लहर के साथ चली
शहर से होके गाँव चली

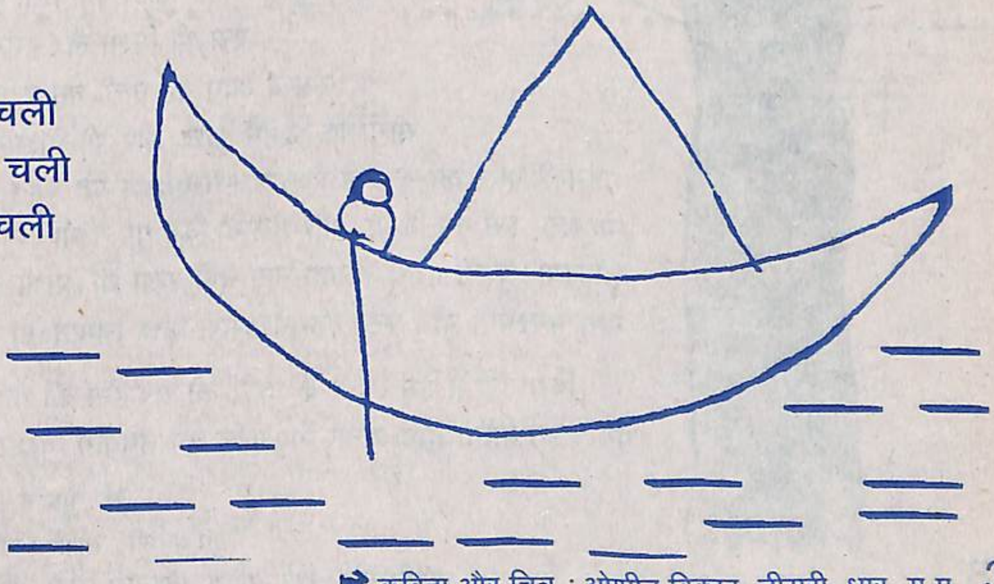

➡ कविता और चित्र : ओशीन विक्टर, तीसरी, धार, म.प्र.

दोस्ती

हम दोनों नौवीं में पढ़ते हैं। हमारी दोस्ती बहुत गहरी है। कई लड़कियाँ हमसे जलती भी हैं। एक दिन शिवा का मूड खराब था। मेरी साधारण-सी बात पर चिढ़ गई और हम दोनों में कुछ बहस हो गई। मैंने उसकी शिकायत क्लास टीचर से कर दी। उसे टीचर ने समझाया। शिवा को अच्छा नहीं लगा, वह रोने लगी। उसका रोना मुझे अच्छा नहीं लगा। मुझे दुख हुआ कि मेरे कारण उसे दुख पहुँचा। उसने मुझसे बात करना ही बन्द कर दिया। पर मेरा मन किसी काम में नहीं लगा। और मुझे एहसास हुआ कि वास्तव में ही, ''मित्र के बिना विद्यार्थी जीवन अधूरा है।'' क्योंकि वह मेरी सुख व दुख दोनों की ही साथी है।

हम दोनों में, अपनी गलती को स्वीकार करते हुए पुनः दोस्ती हो गई।

आरती बाँके, हरदा, म.प्र.

हमने गोंद बनाया

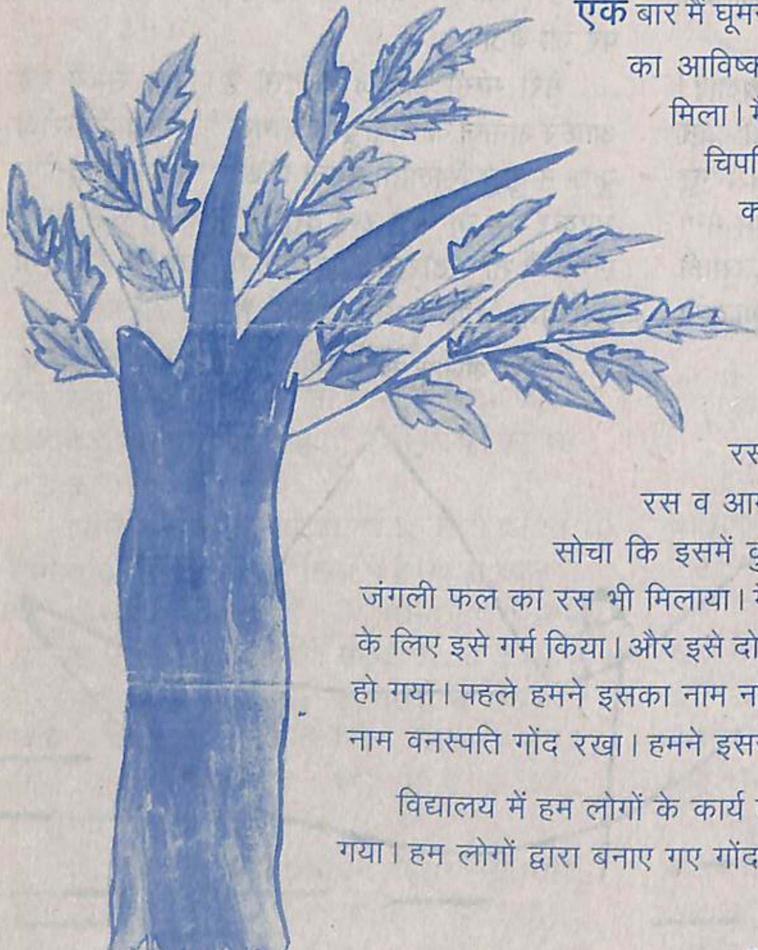

एक बार मैं घूमने जा रही थी। और सोच रही थी कि किस चीज़ का आविष्कार किया जाए। रास्ते में मुझे गूलर का पेड़ मिला। मैंने उसका फल तोड़ा और देखा कि उसमें से चिपचिपा पदार्थ निकल रहा है। तब मैंने सोचा कि क्यों न हम गोंद का आविष्कार करें। तब मैंने अपने ग्रुप के साथियों संध्या, शालिनी, ज्योति, विश्वास व रेखा को इसके बारे में बताया। तब उन्होंने कहा कि इसमें करौंदे का रस, आम की पत्ती का रस, नीम की पत्ती का रस भी मिला लें। हमने गूलर का रस, नीम का रस व आम की पत्ती का रस एक में मिलाया। तब मैंने सोचा कि इसमें कुछ और भी मिलाया जाए। हमने इसमें एक जंगली फल का रस भी मिलाया। मैंने देखा यह बहुत हल्का है, तब गाढ़ा करने के लिए इसे गर्म किया। और इसे दो दिन धूप में भी रखा। तब ये और भी चिपचिपा हो गया। पहले हमने इसका नाम नहीं रखा था। सभी के कहने पर हमने इसका नाम वनस्पति गोंद रखा। हमने इससे कुछ सामान भी चिपकाया।

विद्यालय में हम लोगों के कार्य की सराहना की गई। हमें उत्साहित भी किया गया। हम लोगों द्वारा बनाए गए गोंद का उपयोग विद्यालय में शुरू हो चुका है।

ग्रुप नं. 2, ग्रुप लीडर : सरोज शर्मा
ग्रुप के और साथी : शालिनी मिश्रा, संध्या कौशल, ज्योति गुप्ता, रेखा यादव, विश्वास सिंह, कक्षा सातवीं, फैज़ाबाद, उ. प्र.

पाठक लिखते हैं

हिन्दी में बालोपयोगी विज्ञान साहित्यकी कमी है। बच्चों की साहित्यिक ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए 'चकमक' का प्रकाशन काबिल-ए-तारीफ है। सचमुच, तेज धूप में घने पेड़ की छाया। पत्रिका की सम्पूर्ण सामग्री रूचिकर, आकर्षक और ज्ञानवर्धक है। और साथ ही बच्चों का मनोरंजन करती भी है।

बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता और सोच व अनुभव को इतने अच्छे तरीके से पेश किया जाता है कि हम बड़े भी बचपन की सुनहरी यादों में खो जाते हैं और अपने अनुभव को सिर्फ दिमाग में ही मंडराने नहीं देते बल्कि कागज़ पर उतारने लगते हैं। मेरा पन्ना, मन की बात, हमारे शिक्षक शृंखला, अच्छे लगते हैं क्योंकि भाषा शैली सरल होती है। जनवरी के अंक में 'भुकु भुकु चुनरी', 'पतंगों की दुनिया' अच्छा लगा।

एकाध लेख बालकों की समस्याएँ, दिनचर्या, उनके स्कूल के अनुभव पर हों और कभी-कभी चित्र लघुकथा और कार्टून भी दें। अच्छे प्रकाशन के लिए धन्यवाद के साथ ही भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

● **शुभांगी तावरे, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र**

मुझे चकमक अप्रैल अंक प्राप्त हुआ। उसमें मुझे संगीतकार सिकाडा का लेख बहुत पसंद आया। इस लेख को पढ़कर मैंने अपने दोस्तों को इसके बारे में बताया। सिकाडा को गाँव में 'झंज' कहते हैं। बचपन की कुछ यादें सिकाडा पढ़ने पर मुझे याद हो आईं।

एक बार की बात है जब मैं नौ वर्ष का था। हमारे गाँव में नदी है। हम तीन-चार दोस्त नदी में नहाने जाते थे। रास्ते में बबूल के घने पेड़ थे। गर्मी के दिन में सिकाडा कुछ अजीब तरह की आवाज़ निकालता है। हमने जाकर नदी में बहुत नहाया फिर हमने बबूल के पेड़ पर आवाज़ सुनी तो एक ने कहा अरे भागो, भूत की आवाज़ इस पेड़ से निकल रही है। गाँव में आकर आवाज़ वाली बात सबको बताई। एक बुजुर्ग ने बताया कि बबूल के पेड़ पर जिन्द हैं वही अजीब आवाज़ निकालते हैं। मैं घर आकर बीमार पड़ गया। फिर कुछ दिन बाद अच्छा हो गया। लेकिन उसके बाद से बबूल के पेड़ के पास नहीं गया।

पर जब मैंने सिकाडा का लेख पढ़ा तो मैं लगातार दोपहर में वहाँ जाता रहा। उस आवाज निकालने वाले को डिब्बी में रखकर लाया और उस बुजुर्ग को भी दिखाया।

● **रविशंकर अजनेरिया, आमूपुरा, होशंगाबाद, म.प्र.**

•••••••• यहाँ से काट लें ••••••••

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर माह .... से चकमक भेजना शुरू करें –

नाम .... मोहल्ला ....

डाकघर .... ज़िला .... पिन

सदस्यता शुल्क रु. से भेज रहे हैं।

छह माह	एक साल	दो साल	तीन साल	आजीवन
50.00	100.00	180.00	250.00	1000.00

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक

● जो लागू हो उस पर सही (✓) का निशान लगाएँ।

ड्रॉफ्ट/चेक एकलव्य के नाम में बनवाकर इस पते पर भेजें –

एकलव्य ई–1/25 अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

फोन : 563380

नाम एवं हस्ताक्षर

पाठक लिखते हैं

सपने सच नहीं होते

सपने सच नहीं होते यह शीर्षक देखकर और ये कविता पढ़कर सचमुच मुझे इस सच्चाई को मानने के लिए विवश होना पड़ा कि सपने सच नहीं होते और मुझे अब इस शीर्षक पर खूब विचार करके लिखना भी पड़ रहा है। आपने यह भी लिखा है कि जवाब आसान नहीं है। इसे भी मुझे मानना पड़ रहा है।

मैंने भी ऐसे ही एक बच्चे को सड़क पर आते-जाते देखा है। वो बच्चा एक स्कूल में पढ़ता तो है पर आते समय एक बोरा घास से भरा हुआ लाता है। वो अच्छा पहनना चाहता है, खाना चाहता है। पर आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उसे इतना काम करना पड़ता है। उसकी माँ घास काटती है और वह लौटते समय अपने सिर पर घास का गठ्ठर लिए आता है।

आपने यह भी पूछा है कि ऐसे बच्चों को समुचित पढ़ाई व खाना उपलब्ध कराने के लिए क्या करना चाहिए और यह कौन करेगा? देने के लिए तो मैं बहुत सुझाव दे सकती हूँ कि उनको हमें पढ़ाना चाहिए, कई समितियाँ बनानी चाहिए जो उन्हें पढ़ाएँ। परन्तु मेरे विचार में यह उपदेश मात्र हैं। आधुनिक परिवेश में हर एक व्यक्ति दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगा हुआ है। इसलिए हम ऐसे समय में यह कैसे सोच सकते हैं कि कोई संस्था इनके सुधार के लिए कोई दृढ़ व समुचित कदम उठाएगी।

इनके सपनों को सच करने के लिए एकमात्र साधन शिक्षा है परन्तु ये शिक्षा ग्रहण करने के लिए इन्हें पैसे भी चाहिए जिससे यह स्कूल की फीस भर सकें। ऐसे समय में यह पैसे कैसे लाएँ। और जहाँ तक है कोई व्यक्ति ऐसा न मिलेगा जो बिना शुल्क लिए इन्हें शिक्षा दे, आप ही यह बताएँ कि ऐसे परिवेश में इनके यह सपने सत्य रूप कैसे लेंगे? अन्त में मुझे भी स्वयं आपसे यह प्रश्न पूछना पड़ रहा है कि इनके सपने सच कैसे होंगे? हो सकता है कि किसी और पाठक के विचार मुझे संतुष्ट कर सकें व मुझे और आप दोनों को अपनी समस्या का समाधान मिल जाए।

मनु पाण्डे, जाखनदेवी, अल्मोड़ा, उ.प्र.

यहाँ से काट लें

चकमक के सदस्य बनें आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन

● रश्मि शर्मा, दसवीं, उज्जैन, म.प्र.

● अरुणिमा मोहिले, चौथी, भोपाल, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/2000

• वैशाली कुलकर्णी, पाँचवीं, पुणे, महाराष्ट्र

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना